

तब जूता उतारि सो गयऊ। सूर तासु जूता कर लयऊ ॥
खड़े रहे जब साधु सो आयो । तब ताके पगमें पहिरायो ॥

दोहा—तब वह साधु प्रसन्न अति, करि प्रदक्षिणा चारि ॥

करि दंडवत प्रणामको, बोल्यो वचन सँभारि ॥ ४ ॥

संत उपानहके अहैं, सांचे रक्षक आप ॥

फेरि एक पद रचिज दिन, गायो मुखनिहपाप ॥ ५ ॥

शत योजनलों ताहि दिन, रहजे संत महान ॥

तेउ गान किय वर भये, योगाभ्यास सुजान ॥ ६ ॥

भक्तराजमें ख्यात ब्रज, प्रगट लखे नँदलाल ॥

चरित अमित यह सूरके, मैं कछु कह्यो विशाल ॥ ७ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यांकलियुगखंडे उत्तरार्द्धे चतुर्द्धि

शोत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १३४ ॥

अथ मुरारिदासकी कथा ॥

कवित्त—मुरधर देशमें विलौंदा नाम ग्राम एक तहांके निवा-
सी संत दूसरे मुरारिदास ॥ गानविद्यामें प्रवीण प्रेमाभक्ति
सदा छके बांधि पग नूपुरको नृत्य करें हरि पास ॥ जातिको
न मानै भेद चरणामृत देय जोई शीश धरि पान करै नेम करि
सहुलास ॥ राजगुरु परम प्रतिष्ठित ते एक दिन मज्जनकै आवत
रहे ते रह्यो जो अवास ॥ १ ॥

सोरठा—मगमें एक चमार, बैठो चरणामृत लिये ॥

सो किय ऊंच उचार, पात्र होय सो लेय चाले ॥ १ ॥

सो ध्वनि सुनि मुरारिनिज काना। दौरि तुरित अस वचन वखाना ॥

देहु हमें चरणामृत काहीं । सो मुरारिको चीन्हि तहांहीं ॥

कह्यो तुच्छ मैं जातिहि केरो । सो सुनि कह मुरारि विन देरो ॥

तुच्छन ते हमहूँ ते स्वच्छा । नमे किये चरणामृत दक्षा ॥
अस कहि लै चरणामृत आसू । पाणि लियो करिसहितदुलासू
फैली बात सकल यह गाऊँ । त्योंहीं भूप सभाके ठाऊँ ॥
निज पर जानि भूप कम प्रीती । तब मुरारि नृपसों तजि भीती ॥
एक सूरको भजन सुनाई । नगर त्यागि निवस्यो ब्रज जाई ॥
लिखे देतहों सो पद काहीं । सुनै संत बाँचें मुदमाहीं ॥

भजन—जातिभेद जो करै भक्त सो सोईहै अतिपापी ॥

ताते भलो वधिक परनिंदक गुरुहिंसक मदिरापी ॥

वायसके विष्टाते उपजै पीपर नाम कहावैं ॥

ताहि परिक्रम करे दंडवत सब द्विज पूजन आवैं ॥

तुलसी जो घूरे महुँ उपजै दोष न कोऊ जोई ॥

ते तुलसीके फूल पत्र सब हरिपूजनको होई ॥

योग जाप तीरथ व्रत संयम इनमें तो हरि नाहीं ॥

सूर स्वामि जहँ नित्य विराजै सदाभक्त उरमाहीं ॥ १ ॥

नगर मुरारिदास जब त्यागा । संत रहित पुर लखि दुख पागा ॥

नृपति भयो संतापित भारी । वर्ष रोजमें नृप सुखधारी ॥

उत्सव संत समाजहिं केरो । करत रह्यो सर्वदा घनेरो ॥

दोहा—तेहि हित भूपति गुरुको, गयो लेवावन काहँ ॥

साष्टांग दंडवत किय, दूरहिं ते मुदमाहँ ॥ १ ॥

ताहि संत अपराधी हेरी । गुरु आनन लीन्ह्यो निज फेरी ॥

बैठ पीठिदै लिखौ सुहाई । तेहि प्रमाण तुलसी चौपाई ॥

जो अपराध भक्त कर करई । राम रोष पावकसो जरई ॥

भूपति हाथ जोरि गुरु आगे । रहिगो खड़ो कह्यो अनुरागे ॥

अब महाराज कृपा तुव बाकी । सो पूरण करिये सुख छाकी ॥

शरणागतको तजिबो जोई । अहै अयोग्य कहत बुध लोई ॥

सुनि प्रसन्न गुरु भये कृपाला । लै आयो नृप पुरी निहाला ॥
 सो सुनि आये संत दराजा । भई नृपतिके बड़ी समाजा ॥
 तेहि उत्सव बहु गुणी सिधाये । नृत्य गान कीन्हें सुख छाये ॥
 संत मुरारि तहां सुख कांधी । उभय पाँयमें नूपुर बांधी ॥
 तीनि ग्राम सातौ सुर काहीं । धरि छप्पन मूर्च्छना तहांहीं ॥
 पूरण प्रेम भक्ति उरधारी । समय राम वन गवन विचारी ॥
 दोहा—दशरथको सुरलोकको, जैबो करि पद गान ॥
 राम विरह हरिलोकको, कीन्ह्यो तुरत पयान ॥ २ ॥
 राजा सहित समाज तहँ, ऐसी दशानिहारि ॥
 अचरज गुणि सोचत भये, अस भे दास मुरारि ॥ ३ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्योक्तलियुगखंडे उत्तरार्द्धे पंचत्रिंश

दुत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १३५ ॥

अथ तुंबुरुद्विजकी कथा ॥

दोहा—तुंबुरु द्विज इक भो बढ्यो, चीर द्रौपदी ज्योंहिं ।
 संत सेव हित साजु तेहिं, बढ्यो जानियो त्योंहिं ॥ १ ॥
 वर्ष रोजमें तासु सप्रेमा । मथुरा रह्यो जानको नेमा ॥
 तहां प्रथम सब संत जेवाई । विदा करै पटको पहिराई ॥
 पीछे द्विजन अशन करवावै । ताते द्विजमन कछु दुख पावै ॥
 कहै संतको विविध प्रकारा । तुंबर करत प्रथम सत्कारा ॥
 पीछे हमको भोजन देई । तिनते हमैं छोट गुणि लेई ॥
 बहुत वर्ष बीते यहि भांती । कछु दिनमें घटिगै धन पांती ॥
 तब मथुरा आवत भो सोई । जामे नेम पूर मम होई ॥
 तहँ बहु विप्रन काहँ बोलाई । विनय कियो सबसों हरषाई ॥
 अब मेरे धन अल्प रह्यो घर । निज ग्रण पूर कियो चाहोंवर ॥

लघु धन मोसों बनिहै नाहीं । ताते तुम्हें देहुँ धन काही ॥
जामें मोर पूर प्रण होई । सो कीजै सब मिलि सुदमोई ॥
सुनि ब्राह्मण धन लै कह वानी । करव पूर प्रण सोच नठानी ॥
दोहा—अस कहि द्विज निज मन गुण्यो, याको करें खुवार ॥

भंगहोय यहि कीर्ति जो, छाय रही संसार ॥ २ ॥
ऐसो ठीक निजहि मन दीन्ह्यो । ये सब साज इकट्ठा कीन्ह्यो ॥
सीधा घृत अरु चिनी मिठाई । वर्तन वसन धन्यो घर लाई ॥
कमरा लोई और बनाता । रोक विदाई हित सुखदाता ॥
ये सब जुदे जुदे घरमाहीं । धरि कै पृथक सौंपि जनकाहीं ॥
यक यकको जन बीस बीसको । साज देन कहि दियो मोदको ॥
काहूकहूँ पचास जनकेरी । साज दिवायो कियो न देरी ॥
जामें शीघ्र वस्तु चुकिजाई । याको प्रण देबो मिटिजाई ॥
देन अरम्भ कियो अस चाही । तब हरि दया दीठिसों चाही ॥
जितनी वस्तु जौन घर धारी । सौगुण हो सो परी निहारी ॥
बीस पचास जनेको एका । पाये तबहुँ घटै नहि नेका ॥
ब्रजमंडल चौरासी कोसा । भो प्रसिद्ध जेहि कृष्णभरोसा ॥
तामैं तुलसिदास चौपाई । लिखहुँ प्रमाण सुनहु सब भाई ॥
रामदास सेवक रुचि राखी । वेद पुराण संत सब साखी ॥

दोहा—यह वरण्यो तुंबुर कथा, सादर सुनि सब संत ॥

दृढ़ विश्वास करि ताहि सम, सेवै संत अनंत ॥ ३ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्ल्यांकलियुगखंडेउत्तरार्द्धे

षट्त्रिंशदुत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १३६ ॥

अथ जसवंतकी कथा ॥

दोहा—भयो भक्त जसवंत यक, भगवत भक्तन काहिं ॥

सेवै नित अति भावसों, अंतर राखै नाहिं ॥ १ ॥

वृंदावनमें वास करि, नवधाभक्ति विधान ॥
 राधावल्लभकी सदा, सेवा करै सुजान ॥ २ ॥
 प्रेम मगन जडवत रहै, अंत समय तनु त्यागि ॥
 गमन कियो गोलोकको, कह्यो कथा अनुरागि ॥ ३ ॥
 शत श्रारामरासकावल्याकालयुगखंडेउत्तराद्ध
 सप्तत्रिंशदुत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १३७ ॥

अथ वणिक हरिदासकी कथा ॥

छंद—शिष्य हित हरिवंशजूको वणिक यह हरिदास ॥
 साधु सेवन करै नितहीं सहित परमहुलास ॥
 वृद्ध रह एक दिवस कानन गयो तहँ एक शेर ॥
 धरे सुरभीको रह्यो लखि दयाभरि विन देर ॥ १ ॥
 धाइ भाव नृसिंह करि परि धाय भाष्यो वैन ॥
 माइ यह जग जाइया को छांड़ि मोहिं युतचैन ॥
 करिय भक्षण अब जियहि सो कह्यो वृद्धहि मास ॥
 खायहों नहिं कह्यो तब ये काल्हि मैं तुव पास ॥ २ ॥
 लाय अपनो तनय देहों मानि वचन विश्वास ॥
 लेहु निशिभर परखि तब किय व्याघ्र वैन प्रकास ॥
 भलो प्राण बचाय ताको लाय निज घर संत ॥
 कह्यो सकल हवाल सो तिय पुत्रसों मुदवंत ॥ ३ ॥
 गुणिकै अहिंसा परमधर्महि कहे ते हरषाय ॥
 कियो भल यह कार्य्य पितु तेहिं देहु मोहिं लेजाय ॥
 कही नारी मोहिं दीजै नाथ विलम विहाय ॥
 देत तासु प्रमाण दोहा एक सबहिं सुनाय ॥ ४ ॥
 दोहा—गाइ विप्रं हित तनु तजत, धनि रहीम वे लोग ॥
 चारि लक्ष जग योनि जे, तहां न तिनको भोग ॥ १ ॥

कावेत्त-नारि सुत सहित सबेरे जाय हरिदास, व्याघ्र चुरपर
खड़े भये सुख पायकै ॥ सोवत रह्यो सो जागि देखिकै गराज
कियो फेरि चुप हँकै चतुर्भुज धारि धायकै ॥ कंठमें लगाय
कह्यो प्यारे तुम मेरे भक्त, भजन करहु मेरो नीके वर जायकै ॥
अंत समय तीनों तुम वसोगे विकुंठधाम कथाहरिदासकी यों
कही चितचायकै ॥ १ ॥

इति श्रीरामरसिकावल्यांकलियुगखंडेउत्तरार्द्धे

अष्टत्रिंशदुत्तरशततमोऽध्यायः ॥ १३८ ॥

अथ कई एक भक्तनकी कथा ॥

दोहा-कथा भक्त समुदायकी, अब वरणों सुखदानि ॥

मानदास सब साधुको, सेयो हरिसम मानि ॥ १ ॥

लिये निरंतर रामको, नाम सत्यव्रत धारि ॥

अंत समय हरिपुर गये, परचो प्रकाश निहारि ॥ २ ॥

सीवा नाम भयो यक संता । कथा कहों सुखदानि अनंता ॥

म्लेच्छ अजीज नामको कोई । सैन्य सहित द्वारावति सोई ॥

आगि लगाय देतभो आई । कह्यो स्वप्नमे तब यदुराई ॥

करो भक्तजन मैं प्रतिपाला । करो मोरि रक्षा कोउ हाला ॥

म्लेच्छ दियो यह आगि लगाई । रक्षा करत न कस मम आई ॥

सुनि सीवा सो भक्त उदारा । लिये संग निज चमू अपारा ॥

आय द्वारका दुष्टन मारी । लियो कष्टते जनन उवारी ॥

हैं परसन्न द्वारकाधीसा । भे तनु प्रगट नयन सों दीसा ॥

बढ़ई गढादेशमें एकू । माधव नाम रह्यो सविवेकू ॥

भक्ति प्रेम लक्षणा प्रधाना । होत भयो सो भक्त महाना ॥

नूपुर उभय पाँयमें बांधी । नाचै हरि आगे सुख कांधी ॥

प्रेमविवश विहवल जब होई । गिरन लगै धारै जन कोई ॥

दोहा—लेन परीक्षा हेतु नृप, बैठि उपरत्रय छात ॥

नृत्य करायो नृत्यमें, प्रेम भयो सरसात ॥ ३ ॥

गिरनलग्यो माधव तेहिं काला। थाँभ्यो कोउ न रहै जन जाला॥
नीचे गिरत उपरते भयऊ। पै हरि कृपा बाचि सो गयऊ॥
जैसे वचत भये प्रह्लादा। लह्यो न कछु हरि कृपा विषादा॥
भूपति तब गलानि मनमानी। गहि सोइ रीति भक्ति अति ठानी॥
बडे महान भाव सरनामा। भये गदाधर भट्ट ललामा ॥
रहे भागवतके ते रूपा। बाँचत श्रीभागवत अनूपा ॥
सब श्रोतनके नयनन तेरे। चलैं प्रेमते आंसु घनेरे ॥
कूप रहै यक घरके पासा। बैठि रहे तहँ भट्ट हुलासा ॥
जीवगोसाँईकेर पठाये। तहँ ब्रजते युग वैष्णव आये ॥
पूछे ते भट्टहिं सों तहँवां। भट्ट गदाधरजी हैं कहवां ॥
भट्ट गदाधर सुनि कह वानी। आप कहाँते आवन ठानी ॥
साधु कहे वृंदावन तेरे। आये अहैं आपके नेरे ॥
सुनत गदाधर भट्ट तहांहीं। मूच्छित गिरत भये महि माहीं॥
तनक रह्यो नहिं तनुको भाना। तब कोउ ऐसो वचन बखाना ॥
भट्ट गदाधरजी हैं एई। बोलत भये साधु सुनि तेई ॥
पाती जीवगोसाँई जी की। लाये अहैं आप ढिग नीकी ॥

दोहा—सुनि झट लै चैतन्य है, शिरधरि बाँचि तुरंत ॥

ब्रज चलि जीवगोसाँइसों, मिलत भये मुदवंत ॥ ४ ॥

यक दिन श्रीभागवत पुराना। बाँचत रहे भट्ट मतिवाना ॥
तहँ कल्याणसिंह रजपूता। आवै कथा सुनन मजबूता ॥
कथा श्रवण हरिकी उपासना। छूटि गई तेहिं कामवासना ॥
बिकल होति भै ताकी नारी। यह निज मनमें लियो विचारी॥
मम पति भट्टगदाधर केरो। करिकै संग दियो तजि मेरो ॥

गर्भवती चेरी यक रहही । तासों वचन मुदित अस कहही ॥
आजु जाइ तुम भट्ट कथा महँ।कहै विशेषि वचन श्रोतन पहुँ ॥
मेरे पूर्ण गर्भ अब भयऊ । सो न आजुलों कोहु श्रुति दयऊ ॥
गर्भ गदाधरभट्टहि केरो । जानिलेहु सब जन यह मेरो ॥
कहाँरहों करि देहिँ उपाई । ऐसो चेरी काहँ सिखाई ॥
पठयो भट्टगदाधर पाहीं । कथा समापत भये तहाँहीं ॥
चेरी सों सब कह्यो हवाला । सुनि सब दुखी भये तेहिँ काला ॥

दोहा—सुनिहवाल सो भट्टजी,चेरिहि तुरत बोलाय ॥

भोजनको तदवीर करि,यक थल दियो टिकाय ॥२॥
श्रोतन भई गलानि महाई । होहिँ विवर महि जायँ समाई ॥
जानि शिष्य गण सहित विषादा । अधिकारी राधिका प्रसादा ॥
ते तेहिँ नारी काहँ बोलाई । कह्यो सत्य तू देय सुनाई ॥
सत्य वचन कहिहै जो नाहीं । छीनिलेयँगे तो शिरकाहीं ॥
सत्य बताय दियो तब सोई । तिय कल्याणसिंहकी जोई ॥
सो मोको जस दियो सिखाई । तैसे कहत भई इत आई ॥
सुनि कल्याणसिंह तरवारी । लै काटन गमन्यो शिर नारी ॥
तब श्रीभट्टगदाधर स्वामी । कह न करो अस है बदनामी ॥
जाते अपनो निंद न होई । मानत नीक संतजन सोई ॥
है महत्वमें परम विकारा । क्षमा करब संतनकोसारा ॥
एक समय गे कौनेहुँ देशा । होती रहै कथा तहँ वेसा ॥
सब दृग बहै आंसुकी धारा । यक महंत तहँ रहै उदारा ॥

दोहा—आंसु बहैं नहिँ तासु दृग, सो अस कियो उपाय ॥

मिरिच नैन दोउ घसिलियो,निकस्यो आंसुनिकायद
पद गहि तासु भट्टसो जानी । कह असि रति मम होय महानी ॥
जैसी प्रीति आप उरधारी । निकसायो नैननसों वारी ॥

अस कहि कीन्हें रुदन अपारा । नैनन बही आँसुकी धारा ॥
 ऐसो प्रेम भट्टको भारी । लेहु संत सब मनहिं विचारी ॥
 इक दिन चोर पैठ घरमार्ही । रहैं जागते आप तहांहीं ॥
 साज समेत मोटरी बांधी । उठै न लग्यो उठावन साथी ॥
 छोड़ि न सकै होत भिनसारा । देखि भट्ट अस वचन उचारा ॥
 तुम श्रम करहु न हम ढिग आई । देत अहैं मोटरी उठाई ॥
 याते दश गुण वस्तु हमारे । धरी लेहु सो मेटि खभारे ॥
 लगे उठावन संत भट्ट जब । चोर ठौर तेहिं पाँय पन्यो तब ॥
 शिष्य भयो पुनि तजिकै चोरी । कीन्ही हरिमैं प्रीति अथोरी ॥
 ऐसी तिनकी कथा अनेका । वर्णन कीन्ह्यो मैं इत नेका ॥

दोहा—परमभागवत होतभे, संत किशोरहुदास ।

प्रेम लक्षणा भक्ति करि, हरिपुर कियो निवास ॥ ७ ॥

कवित्त—कोल्हदास अल्हदास दोनों भाई राजकुल भये
 उत्पन्न संत प्रथित उदार अति ॥ कोल्ह जेठ भाइ रह्यो परम
 विरक्त जग अल्ह तासु सेवा करै कपट विहीन सति ॥ कोल्ह
 अल्ह दोऊ गये द्वारावति नाथ आगे कोल्हदास भजन बनाय
 गायो सानि रति ॥ पीछे अल्ह गान कीन्ह्यो प्रेम सरसाय हरि
 हूंकी दीन्ह्यो माल देहु अल्ह काहिं मोदमति ॥ १ ॥

दोहा—लै पंडा डारनलग्यो, अल्ह गलेमें धाय ॥

कह्यो अल्ह पहिरावहु, मम जेठो जो भाय ॥ ८ ॥

पंडा कह हरि तुमहिं दिय, दीन्ह्यो तिनको नाहिं ॥

अस कहि माला अल्ह गल, दीन्ह्यो डारि तहांहिं ॥ ९ ॥

कोल्ह मानि तब अति अपमाना । कूदि पन्यो जलसिंधु महाना ॥
 डूबि जाय भीतर जल मारी । पायगयो सो मारग काही ॥
 चलत चलत द्वारका दिव्य कहैं । पहुँचि गयो सो परम मोदमहैं ॥

हारि आगू जे गये लेवाई । भोजन हित दीन्ह्यो बैठाई ॥
 परस्यो दुइ पतरी युत प्रीती । तब किय वियन कोल्ह यहि रीती ॥
 दूसरि पतरी दिय यह धारी । ताको कहिये हेतु मुरारी ॥
 प्रभु कह अहै जो लघु तुव भाई । तेहि हित यह पातरी धराई ॥
 सुनत कोल्ह अतिशय दुखमान्यो । पुनि निज मनमें यह अनुमान्यो
 यक तो दैकै नाथहुँकारी । मालदिवायो अल्ह सुखारी ॥
 जन्महि ते हम सबको त्यागी । भजन कियो इनको अनुरागी ॥
 भक्तन सेवी संतन केरो । अल्ह भ्रात लघुहै जो मेरो ॥
 सो अजहूँ प्रभु विसरत नाहीं । भाव करत अधिकै तेहिं माहीं ॥

दोहा—इनके साधु असाधु सब, जानो परत समान ॥

दुख मति मानहु जानि यह, किय बखान भगवान ॥ १० ॥

घनाक्षरी—तेरो जो कनिष्ठ भाई राजपुत्र रह्यो पूर्व मेरो
 बड़ो भक्त भयो राजको विहायकै ॥ साहिबी विलोकि एक भूप
 केरी कीन्ह्यो मन ऐसे होय मेरिहू विभूति सरसायकै ॥ ताते
 भये राजकुल आयो जबते तू इहां तबते सो अन्न जल
 छोंड़्यो दुख छायकै ॥ बेगि जाय वाको सुख देहु कोल्हदास
 तुम शंख चक्र भुजनपै दीन्ह्यो ऐसो गायकै ॥ १ ॥

सोरठा—दै प्रसाद तेहिं हाथ, विदा कियो यदुनाथ पुनि ॥

बाहिर कटि मुख गाथ, दियो कोल्ह तजि अनुजको ॥ १

करि मन परम उराउ, निज घरमें आये दोऊ ॥

ऐसे अमित प्रभाव, कोल्ह अल्हके जानिये ॥ २ ॥

कोल्ह वंश नारायणदासा । भये करहु तिन चरित प्रकाशा ॥
 रहैं और भाई तिन केरे । ते कमाय लाये धन ठेरे ॥
 ये लहुरे अति रहैं उदारा । वितरहि सबको द्रव्य अपारा ॥
 यक दिन भौजाई तेहिं केरी । रूख अन्न भोजन दिय हेरी ॥

दुख करि कह्यो हालको जोई। बनो होय दीजै मोहिं सोई ॥
 सुनि भाभी अस वचन बखाना। कहां तुमहुँको श्री भगवाना ॥
 दियो हुँकारी किय अपहासा। बोल्यो तब नारायणदासा ॥
 अबतो मैं भरवाय हुँकारी। हरिको ऐहों अयन सुखारी ॥
 अस कहि गृहते निकसि तुरंता। परमभक्ति करिकै भगवंता ॥
 गान करन लाग्यो हरि आगे। तब भगवान परम अनुरागे ॥
 दै हुँकारि दिय माल प्रसादा। जस अल्हहिं दिय युत अहलादा ॥
 लै नारायणदास मुदित मन। भाभी कर दिय लही सो सुख घन ॥

दोहा—पृथ्वीराज यक भक्त नृप, बीकानेर सुथान ॥

भयो संस्कृत भाषहुँ, में परवीन महान ॥ ११ ॥

करै मानसी हरिको ध्याना। कीन्ह्यो सो परदेश पयाना ॥
 तहँ निज घरके मंदिरमाहीं। रहे जे निज ठाकुर तिनकाहीं ॥
 तीन दिवशलों ध्यानहि धारच्यो। सो मूरति मंदिर न निहारच्यो
 शंकित ह्वै सांडिया निकेता। पठ्यो खबरि लेनके हेता ॥
 लिख्यो पत्रमें यही हवाला। आयो सो नृपअयन उताला ॥
 तहँते जन यह खबरि लिखाई। नृप समीप में दियो पठाई ॥
 मंदिर भीतर चून छपाई। रही यहीते इत नृपराई ॥
 बाहर तीनि दिवश भगवाना। रहे बांचि सो नृपति सुजाना ॥
 ह्वै प्रसन्न अति मथुरा आई। तनु त्यागहुँ अस मन ठहराई ॥
 करी प्रतिज्ञा शाह सो जानी। दै पठ्यो निदेश सुखमानी ॥
 काबुलको नृप करहु पयाना। सुनि नृप तहां जाय मतिवाना
 जीवन अवधि जानिकै थोरी। भक्ति प्रभाव भगवतहि सौरी ॥

दोहा—ह्वै सवार सांडिनी महँ, काबुलते चलि आसु ॥

मथुरा आय शरीर तजि, वास कियो हरि पासु ॥ १२ ॥

कायथ वासी ग्वालियर, खड्गसेन जेहिनाम ॥

सदा साधुसेवा करै, ध्याय कृष्ण वसुयाम ॥ १३ ॥
सादर सुनै कृष्णकी गाथा । चाकर रहै भानगढ़ नाथा ॥
करै स्वामिको काज सदाई। दुख सुख सम गुणि छलहि विहाई ॥
संत प्रसादीको रह नेमा । यशकी चाह रहति युत प्रेमा ॥
संत सहस्रन अज्ञान करावै । ऐसो अति उदार जग भावै ॥
चुगुलन जाय नृपतिके पासा । चुगली कीन्हों सहित हुलासा ॥
खड्गसेन धन सकल तिहारो । देत जनन हम नयन निहारो ॥
सुनत भूप सो रोषहि धारच्यो । बंदीखानामें तेहि डारच्यो ॥
अन्न जलहु भोजन नहिं दीन्ह्यो । तब यमराज कोप अति कीन्ह्यो
यम निज दूतन दियो पठाई । ताड़न लगे भूप ते धाई ॥
तब जकि रह्यो भूप डर छाई । दिये वचन यमदूत सुनाई ॥
तू नृप अहै बड़ो अज्ञानी । देत भक्तको दुख रिससानी ॥
ताते धर्मराज हमकाहीं । पठयो मारन तुव ढिगमाहीं ॥

दोहा—असकहि दीन्ह्यो पलंगते, भूपहि दूत गिराय ॥

है विसंज्ञगो चुगुलहुन, दीन्ह्यो फेरि सजाय ॥ १४ ॥
भूपति जब चैतन्यहि भयऊ । खड्गसेन पद तब गहि लयऊ ॥
फेरि बंदिते तुरत निकासी । खड्गसेनसों कह्यो हुलासी ॥
रहिये आप सदा निज गेहू । लेहों दरशन आय सनेहू ॥
खड्गसेनको लिय गुरु मानी । भूपति सो गहि रीति अमानी ॥
करत साधुसेवा अति प्रीति । खड्गसेनको त्रय पन बीते ॥
चौथे पन निज गृहको त्यागी । वृंदावन गमन्यो अनुरागी ॥
तहां रासकी करै समाजा । लीला लखि सुखलहै दराजा ॥
यक दिन शरदपूर्णमा पाहीं । कृष्णरासके मंडलमाहीं ॥
वढनिभाव अनुरूपहि केरी । ताथेई करिबो मुख टेरी ॥

लखि चख सुनि प्रमोद उरधारी। पुनि हरि राधा सुछवि निहारी॥
करि भावना खेल तेहि केरो । खड्गसेन तनु तजि बिन देरो ॥
नित्य अप्रगट जो हरि रासा । तहँ सहुलास जाय किय वासा॥

दोहा—निरखि संतजन रासतेहि, जय जय कीन्ह्यो शोर ॥

गंगनाम एक ग्वालकी, कहौ कथा शिरमोर ॥ १५ ॥
परमभक्त वृंदावन माहीं । कियो निरंतर वास सदाहीं ॥
एक समय किय शाह पयाना । गंग काहँ करिकै दीवाना ॥
वृंदावनको वास छोड़ाई । राख्यो दिल्लीमें लैजाई ॥
जानि गंगको प्रण ब्रजवासा । हरिसों विनय कियो हरिदासा ॥
दिल्लीते तब श्रीभगवाना । गंगहि दिय छोड़ाय सब जाना ॥
तब वृंदावन गंगसिधाई । तनु तजि बस्यो निकट यदुराई ॥
कृष्णदास एक रहै सोनारा । कृष्णदासको भक्त अपारा ॥
नृत्य करत लखि कृष्णरास महँ । कृष्णदास तेहि रंग रंगे तहँ ॥
नूपुर युगल पायँमें बांधी । नृत्य करन लागे सुख कांधी ॥
तनक रहि गयो नहिं तनु भाना । एक पग नूपुर टुट्यो न जाना ॥
तब करि कृष्ण कृपा उर भारी । गतिकी तहँ भंगता निहारी ॥
अपने पगको नूपुर छोरी । कृष्णदास पग दीन्ह्यो जोरी ॥

दोहा—कृष्णदासके सुधि भई, निरख्यो नूपुर छूट ॥

कृष्ण कृष्णदासहुँ पगनि, नूपुर निरखि अटूट ॥ १६ ॥
जय जय कीन्हें शोर तहँ, जुरी जो सकल समाज ॥
वरणों मथुरादासको, अब इतिहास दराज ॥ १७ ॥
रहे तिजारा ग्राम निवासी । राजगुरु जग सुयश प्रकाशी ॥
संत सेव रत परम विरागी । संतत राम नाम अनुरागी ॥
एक दिवस आये पाखंडी । शालिग्राम लिहे सुख मंडी ॥
नूपुर पगन बांधि तिन आगे । करहिं नृत्य अति प्रेमहिं पागे ॥

रहैं लगाये कर यहि भांती । जामें नृत्य करत मुदमाती ॥
 शालिग्राम जौन सिंहासन । डोलन लगै लखैं सिंगरे जन ॥
 निरखि नयन सिंगरे पुरवासी । लागे करन प्रशंसा खासी ॥
 सजन बड़े ग्राम यहि आये । नृत्यत शिलहु प्रेम प्रगटाये ॥
 शिष्य ग्रामके भे जन यूहा । दिये भेंट लाग्यो धन कूहा ॥
 मथुरादास निकट जन जाई । एक दिन कर विनती वरियाई ॥
 तहँ लै आय ठाढ़ करिदयऊ । बंद ठगनको कर ह्वैगयऊ ॥
 ठग अनेक तहँ किये उपाई । प्रेम न शिला पन्यो दरशाई ॥

दोहा—मथुरादास प्रभाव यह, ठग अपने मन जानि ॥

मान्यो मूठ न किय असर, भक्त तेज वर मानि ॥१८॥

उलटि गई वाही ढिग पाहीं । बिन शरीर सो भयो तहांहीं ॥
 तब वह ठगके ठग सँगवारे । बहु प्रार्थना किये शिरधारे ॥
 मथुरादास स्वामि सुख छाई । तब तिनको सब कपट छोड़ाई ॥
 वाहु ठगको दियो जिपाई । प्रभु उपदेश सबै ठग पाई ॥
 शालिग्राम शिलामहँ सांचो । कीन्हें भाव गयो मिटि काँचो ॥
 एक जैतारण विदुर सुसंता । और प्रबोधानंद महंता ॥
 ये दोउ बड़े राम अनुरागी । सेवैं सदा संत बड़भागी ॥
 जैतारण खेती करवाई । वर्षा बिन सो गई सुखाई ॥
 तकि संदेह कियो मनमाहीं । किमि सेइहौं संतजन काहीं ॥
 तब जैतारणको भगवाना । दीन्ह्यो स्वप्न आय स्थाना ॥
 चलिकै खेत कटावहु जाई । ताको पुनि द्रुत लेहु गहाई ॥
 है हजार मन तामें अन्ना । ह्वैहैं सेवहु संत प्रसन्ना ॥

दोहा—भोर भये चलि खेतमें, किय जैतारण सोय ॥

होत भयो तेहिं भांतिसों, अन्न गये मुद मोय ॥१९॥

क्षनाक्षरी—राम नृप एक कोऊ उदभट कर्म कियो करों सो
 बखान शरदपूर्णिमामें भयो रासु ॥ सखिन समेत तहां नृत्य
 गान करे कृष्ण, सुछवि निहारि भोर असक्त मानिकै हुलासु ॥ विप्र-
 नसों कह्यो प्यारे काहँ कहा भेंट देहुँ तिन कह्यो प्यारी वस्तु
 दीजै होय जो प्रकाशु ॥ भूप सुनि प्यारी गुनि कन्याकाहँ दियो
 देखि, सोचि सब कहे दियो द्रव्य लियो सुता आसु ॥ १ ॥ नृपति
 जगतसिंह रहै हरिभक्त जहां जाय तहां आगे हरि पालकी चढ़ा-
 यकै ॥ चलै अरि युद्धसमय आप आगे रहै पीछे राखै हरिकाहँ
 सो नहारै कभी जायकै ॥ आपनेही कर पूजै भगवान एक समय
 शाह नवरंगजेव बोल्यो गये चायकै ॥ नौबत बजत देखि खून
 खाय शाह तौन नौबत फेंकायो कालिंदीमें रोष छायकै ॥ २ ॥

दोहा—जल भीतर नौबत शब्द, सुनि अचरज गुणि शाह ॥

जगतसिंह भूपति चरण, गह्यो सहित उत्साह ॥ २० ॥

नृप जगदेव समान उदारा । होतभयो हरिदास भुवारा ॥
 जो जगदेव भूप जगमाहीं । किय उदारता कहों यहांहीं ॥
 पुनि कहिहों हरिदासहु केरी । कथा दानि उर मोद वनेरी ॥
 अति उदारता ताकर जानी । लेन परीक्षाहित सुखसानी ॥
 नृत्य गानमें परम प्रवीनी । शक्ति नरी वपु धारि नवीनी ॥
 नृप जगदेव समीप सिधाई । नृत्य गान करि लियो रिझाई ॥
 नृपति रीझि तेहि देन विचारयो । देन तौन नहिं वस्तु निहारयो ॥
 तब शिर काटि देन सो चाह्यो । काटन हित कर तेग उबाह्यो ॥
 लखि सो नटी हाथ गहिलीन्ह्यो । कहत भई मैं निज वदि कीन्ह्यो ॥
 मेरी थाती शिर प्रभु राखी । लेहों जब ह्वैहों अभिलाषी ॥
 कैकेयीके सम वरदाना । थाती धरि शिर राख्यो प्राना ॥
 फेरि नटी भूपतिसों बोली । आप शीश दिय प्रीति अतोली ॥

दोहा—मैं निज दाहिन बाहुँको, देती अहों चढ़ाय ॥

कोहु नृपपैदाहिन भुजा, नहिं वोढ़ाइहों जाय ॥२१॥
ऐसो दान कौन मोहिं देहै । जैसो आप दियो सुखम्वैहै ॥
अस कहि नटी सो गई सिधारी । इक उदार नृप गुणी विचारी ॥
नटी काहँ निज निकट बोलाई । नृत्य गान सुनि रीझि महाई ॥
राजा देन इनाम बोलायो । नटी लेन कर वाम उठायो ॥
वामहाथ लखि भूपति भाषा । कही सो जगदेवहि दै राखा ॥
कह्यऊ सो जगदेव इनामा । दियो सो देहैं हमहुँ ललामा ॥
नटी कही सो नहिं दैजैहै । नृप कहि तेहि दशगुण इत पैहै ॥
नटी कही तौ दाहिन हाथा । लेहों मैं इनाम नृपनाथा ॥
नटी जाय तब ढिग जगदेवा । शिर मांग्यो कहि सिंगरो भेवा ॥
शिर उतारि तेहिं दक्षिण पानी । धरि दीन्ह्यों भूपति सुखमानी ॥
नटी नृपति तनु यतन धराई । वही नरेश पास द्रुत जाई ॥
नृप जगदेव शीश देखराई । कही जो यहि दशगुण नर राई ॥

दोहा—देहु तौ दक्षिण हाथ मैं, तुमहिं वोढाऊँ आशु ॥

लखि महीप मूर्छित गिरचो, किय पुनि वचन प्रकाशु ॥२२॥
देश ग्राम धन जो कछु होई । सो मैं अबहिं देहुँ मुदमोई ॥
मोहिं यह दान देनगति नार्ही । सुनि सो शक्ति नटी सुखमार्ही ॥
तुरत पास जगदेव सिधाई । शीश जोरि निज गान सुनाई ॥
अब हवाल वह भूपसुताको । कहौं सुनहु जाहिर वसुधाको ॥
नटी शीश सो जब लै आई । सो हवाल सुनि सुता सुहाई ॥
कही पिता सों लाज विहाई । मोहिं व्याहहु जगदेव बोलाई ॥
तब वह नृप जगदेव बोलायो । नृप जगदेव भूप ढिग आयो ॥
जगदेवहिं सो बहु समझाई । कह्यो सुता लीजै हरषाई ॥
कह जगदेव कहहु सौ बारा । तबहुँ न ह्वैहै व्याह हमारा ॥

यक पत्नी व्रत रहै हमारो । पुनि राजा अस वचन उचारो ॥
 इनहिं हतो कह जन बोलवाई । सुनि अकेल तेहिं लैगे धाई ॥
 तब कन्या बोली मतिं मारहु । देखिलेहुं मेरे ढिग लावहु ॥
 दोहा—कहे लोग नृप सुता कहैं, इनको चलहु लेवाय ॥

कह जगदेव न ताकिहौं, वाको मैं तहँ जाय ॥ २३ ॥
 | सुनि सो सुता कही रिसधारी । लावहु वाको शीश उतारी ॥
 तब शिर काटि थार भरि लीन्ह्यो । कन्याके आगे धरिदीन्ह्यो ॥
 जब कन्या दृग जोरन लागी । तब तेहिं शिर फिरिगो दुखपागी ॥
 दृग जोरयो जगदेव न माथा । वरण्यो मैं ताकी असि गाथा ॥
 ताके सम हरिदास भुवाला । भयो कहीं तेहि कथा रसाला ॥
 कियो शरीरार्पण पर काजा । संतन सेवन कियो दराजा ॥
 संतनको परदा नहिं राखै । जाहिं जनाने कछु न भाखै ॥
 एक समय इक संत सिधार्ह । रमि जनानखाने रहजाई ॥
 तहां संत नृप दुहितोकेरो । बढ्यो अछेह सनेह घनेरो ॥
 एक समय ग्रीष्म ऋतुमाही । छत ऊपर तेहिं कन्याकाही ॥
 लै तेहि गात उपरकरि गाता । सोवत रह्यो होत परभाता ॥
 करन हेतु हरिदास सुखारी । चढ़त भयो तेहिं अंचि अटारी ॥

दोहा—साधु और निज सुता को, सोवत लखि सुखवंत ॥

पट वोढायकै आपनो, आयो उतरि तुरंत ॥ २४ ॥
 जागि पिता पट चीन्हि कुमारी । होत भई लज्जित मन भारी ॥
 डरयो संत शंकित तेहिं जानी । लै एकंत सिखयो मृदुवानी ॥
 जौन कार्य करिबो मन होई । सावधान है करिये सोई ॥
 जो जन दुष्ट छिद्रको पाई । कहै निंदि कटुवचन सुनाई ॥
 वो सुनि संत कलंक महाना । जरिहै छाती मोर नशाना ॥
 सुनत साधु लज्या अति धारी । चलन हेतु निज कियो तयारी ॥

तब नृप ताहि राखि घरमाहीं । दीन्ह्यो परमप्रमोद सदाहीं ॥
 ऐसो सेवी साधुन केरो । भूपति भो हरिदास निवेरो ॥
 हरीदासके छोटे भाई । गोविंददास संत सुखदाई ॥
 शिष्य स्वामि हरिवंशहि केरे । टेरै वेणु सदा हरि नेरे ॥
 राधावल्लभहीकी आशा । कियो जगत ते भये निराशा ॥
 राग रागिनी सब मुरली महुँ । टेरिसुनावै प्रमुदित हरिकहुँ ॥

दोहा—आगे करि हरिपालकी, पीछे गमनहि आप ॥

शाह बोलि कह यक समय, मुरलीमें तुव थाप ॥ २५ ॥
 सो हमहुँ कहँ देहु सुनाई । सुनि जवाब दिय भीति विहाई ॥
 दोहा—प्रभु आगे मुरली बजै, तव आगे तरवार ॥

और कछु होनो नहीं, यही बात निरधार ॥ २६ ॥
 अस कहि बादशाह सों वैना । गोविंद आयो सिविर सचैना ॥
 शाह चमू दै बहुसंग माहीं । पठयो इक सरदारहि काहीं ॥
 चढ़िपालकी रह्यो सो आवत । खड्ग चलयो आपहिंते तहुँ द्रुत ॥
 कव्यो वांस गिरिगो सरदारा । शाह मानि आचरज अपारा ॥
 आय पाँय दोऊ गहिलीन्ह्यो । बहुविधि तासु प्रशंसा कीन्ह्यो ॥
 रहेनरायणदास सुसंता । परम अनन्य भक्त सियकंता ॥
 हैहाँडिया सरायके वासी । करहि नृत्य हरि ढिग सुखरासी ॥
 एक समय पर्यटनै हेतू । गये नरायणदास सचेतू ॥
 म्लेच्छमीर यक कौनहु देशा । रहै बोलिसो दियो निदेशा ॥
 मेरे आगे नृत्यहिं ठानो । ताको कह्यो न ये कछु मानो ॥
 कह्यो करैं हम नृत्य सदाहीं । हरिके आगे अनतै नाहीं ॥

दोहा—ऊंचे थल तुलसी निरखि, तहुँ सिंहासन धारि ॥

नृत्य गान करने लगे, हरि आगे मनुहारि ॥ २७ ॥
 यक दिशि बैठी संत समाजा । यक दिशि बैठ्यो मीर दराजा ॥

निरखन लाग्यो नयन लगाई । रीझि गयो सो अति सुख पाई ॥
 नेवछावर सो करन विचार्यो । वस्तु न कौनहु नयन निहार्यो
 तब सो मीर प्राण निज वारी । तनु तजि गो हरि निकट सिधारी
 परशुराम यक रह्यो महंता । चाल राजसी सेवी संता ॥
 संत समाज तुरंग मतंगा । चलै पचाश लिये निज संग ॥
 छरीदार दौरहिं तेहि आगे । चवँर चलावैं जन अनुरागे ॥
 जड़ जंगलीदेशके लोग ॥ तिन्हैं कियो शुचि चलि बिन शोग ॥
 गद्दी तक्की काहँ लगाई । यक दिन बैठिरहे तहँ आई ॥
 एक साधु करि कोप अपारा । करत भयो अस वचन उचारा ॥
 अस ऐश्वर्य माहँ हरि केरो । भजन न होत सुनहु सति मेरो ॥
 हरे निमित्त तनु धूरि लगायो । आय राजगृह गुरू कहायो ॥

दोहा—वृथा गृहस्थी धारिकै, साजु राजसी ठानि ॥

बैठे हो सुनि कह्यो तिन, दोहा द्वै निर्मानि ॥ २८ ॥

माया सगी न मन सगा, सगा न यह संसार ॥

परशुराम यह जीवको, सगा सो सिरजनहार ॥ २९ ॥

कहतैहैं करते नहीं, मुखके बड़े लवार ॥

काले मुँहड़े जाँइगे साँईके दरवार ॥ ३० ॥

कहै आप सति साधुपै, हम बहु कियो उपाय ॥

यह ऐश्वर्य कभी नहीं, मेरे संगते जाय ॥ ३१ ॥

सुनत साधु भाष्योगहिं हाथा । ये सब त्यागि चलै मम साथा ॥

सुनि महंत उठि चले तुरंता । गिरि कंदरा गयो लै संता ॥

निर्जन जहां जात नहि कोई । बैठ तहां जहँ खोज नहोई ॥

तब महंत युत परमउछाहा । तेहि साधूको बहुत सराहा ॥

ताही समय साधु यक दर्शन । हेतु जात रह तेहि कोउ गिरिजन

दियो बताय यही गिरिकंदर । अहै महंतलख्यो हम सुखकर ॥

तब सो साहु तहां द्रुत जाई । गहिकै चरण परम सुख पाई ॥
मुद्रा सहस पालकी दीन्ह्यो । यक तुरंग अर्पण पुनि कीन्ह्यो ॥
डेरा तेहि पहाड़ तर डारी । सेवा हित बहु मनुज हँकारी ॥
दियो लगाय चलन पंखा तहँ । लगे महंत कह्यो साधू पहँ ॥
अब हम कहाकरैं लाखि लीजै । राम रजाय यही सो कीजै ॥
तब सो वैष्णव है प्रसन्न अति । पद गहि कह्यो चलिय आश्रम सति
दोहा—हैं विरक्त प्रभु आप यह, हरि इच्छा ऐश्वर्ज ॥

दूरिभयो मम मोह अब, है न आपकेगर्ज ॥ ३२ ॥

परशुराम सुनि सपदि तब, निज आश्रममें आय ॥

संतनकी सेवा सतत, करन लग्यो मन लाय ॥ ३३ ॥

संतदास यक संत सुपासी । रहै नेवाई ग्राम निवासी ॥
निज मति सति जगदीश लगाई । नीलाचल गवने सुख पाई ॥
वनमें पत्र फूल फल हेरी । छपन प्रकार भोग शुभ केरी ॥
करि भावना मानसै माहीं । संतन दियो अरपि हरि काहीं ॥
सो नीलाचलमें जगनाथा । रुचि सों पायो लहि सुख गाथा ॥
कह्यो नकछु संतहि निशि भूपै । स्वप्न दियो हरि कृपा अनूपै ॥
सादर जो कोउ संत जेवावै । ताते मोरि तृप्ति है जावै ॥
जागि नृपति सबसों सुखमानी । कह्यो परचोतब सबको जानी ॥
भयो कल्याण दास यक संता । भजनानंद सदा सियकंता ॥
प्राण पयान समै सब त्यागी । मन लगाय रघुपति अनुरागी ॥
गयो रामके धाम बजाई । जय जय किये संत समुदाई ॥
भो भगवानदास इक साधू । सेवै साधुन प्रीति अगाधू ॥

दोहा—रह्यो उपासक प्रथित जग, माला तिलकहि केर ॥

बादशाहको हुकुमभो, एक दिवश विन देर ॥ ३४ ॥

तिलक न देय कोउयाहि ग्रामा । धारै उर कंठी नहिं दामा ॥

ताते कंठी माल सैकरन । उतरगये त्यों छूटि तिलकतना॥
 जब भगवानदासके पास । आये जन करि कोप प्रकासा॥
 तहँ भगवानदासको निरखत । तेउभे कंठी माल तिलक युत॥
 ते मुखसों भापन नहिं पायो । लखि भगवानदास अस गायो ॥
 तिलक भाल गलकंठी माला । तनु आपने लेहु लखि हाला ॥
 और बात चालहु हमसों पुनि । लज्जित गये शाह पै ते सुनि ॥
 कंठी माल तिलक युत भेषा । तिनको शाहनयन निज देखा॥
 तिनसों सिंगरो पूछ हवाला । मानि सत्य अति भयोनिहाला॥
 ह्वै प्रसन्न भगवानहिं दासा । दीन्ह्यो पथुरापुर को वासा ॥
 ते पूजन करिकै हरि केरो । मथुरा बसे मानि मुद ठेरो ॥
 वंशवल्लभाचार्यहिं माहीं । गोकुल नाथ भये तिन काहीं ॥

दोहा—वर्णन मैं अब करतहों, आयो तिनके पास ॥

लाखनकी संपति लिये, यक जन सहित हुलास॥३५॥
 मोहिं मंत्रदै शिष्य करीजै । कह्यो नाथ जाते अवछीजै ॥
 गोकुलनाथ वचन तब टेरा । काहुमें लागत मन तेरा ॥
 सुनि सो कह्यो न कहूँ मन भीजै । तब इन कह्यो अनत गुरु कीजै ॥
 शिष्य तुमहिं हम करिहैं नाहीं । ताको हेतु सुनहु हम पाहीं ॥
 जेहि मन जगतविषय हिंसामै । लागत सो जन खैंचि ललामै ॥
 हरिमैं तेहि विधि सकत लगाई । जाको मन सर्वत्र उड़ाई ॥
 वह हरि ओर कबहुँ नहिं आवै । द्रव्य नहित हरि साधु लगावै ॥
 करै जो गुरु शिष्य जेहि काहीं । धन तजि होय लोभवश नाहीं ॥
 गुरुशिष्य संसार छोड़ाई । देइ यही सिद्धांत सदाई ॥
 गोकुलनाथ वचन सो मानी । भयो शिष्य तेहि भांति अमानी ॥
 येक हलालखोर तहँ रहई । कान्हा नाम तासु सब कहई ॥
 हरिमें निशि दिन मनहि लगाई । रटै नाम मुखसों सुख छाई ॥

दोहा—सौहे मंदिर नाथजी,नित मिसि झारू दैन ॥

रहै दरशकरि लालसा, भरो परम उर चैन ॥ ३६ ॥

तहँ श्रीगोकुलनाथ महंता । रहै प्रथित पुहुमी यशवंता ॥
कह्यो रोज इत होत सकारा । देखि परत यह झारूदारा ॥
कहै जो कोउ झारू नहिं देई । अस विचारि अपने मनतेई ॥
मंदिर सौह आड़के हेतू । भीती लिय उठाय मति सेतू ॥
कान्हा झारन हेतु सवेरे । आवै नाथ परै नहिं हेरे ॥
हरिको हरिदासहिको दरशन । दास काहँ हरिदरशन क्षनक्षन ॥
हानि भई जब दोनहुँ केरी । नाथ स्वप्न में तब यह टेरी ॥
गोकुलनाथ फोरु यह भीती । शालति मोहिं कियो अनरीती ॥
अस द्वै बार स्वप्नमे नाथा । कह्यो न किय श्रुति गोकुलनाथा ॥
तब तिसराय कही हरि वानी । कान्हा परमभक्त विज्ञानी ॥
ताके दरश आड़ तुम कीन्ह्यो । भीती फोरि आसु अब दीन्ह्यो ॥
मम दरशन हित भोजन त्यागी । देत भयोहै सो अनुरागी ॥

दोहा—सुनि महंत सो भीतिको, दियो तुरंत गिराय ॥

गहि पग झारूदारके,सतकाय्यो वर लाय ॥ ३७ ॥

संतनमाहँ प्रधान गनाई । झारू दीयो दिवो छुड़ाई ॥
ताते जानिलेहु यह भाई । हरिदरबार न जाति बड़ाई ॥
भगवतकर्म भक्ति जन जोई । करत जगतमें उत्तम सोई ॥
भक्ति रूप ब्राह्मणको जानो । भक्ति सहित तेहिं ब्राह्मण मानो ॥
जासु काय हरि भक्ति विहीना । डोम सोइ यदि बहुत प्रवीना ॥
यह सिद्धांत युधिष्ठिर पाहीं । भीष्मदेव कह भारत माहीं ॥
संतसेव रत गिरिधर ग्वाला । रहै जक्त एक भक्त विशाला ॥
नेम साधु चरणामृतकेरो । किये रहै लहि मोद घनेरो ॥
साधु मृतकहू को अति सेई । सादर चरणोदक लैलेई ॥

तासु प्रभाव त्यागि तनु काहीं। निवसत भो हरिधाम सदाहीं ॥
 रामदास यक भयो सुसंता । बालहिं ते करि रति भगवंता ॥
 रीति संत सेवनकी लीनी । प्रीति न जगतमाहँ कछु कीनी ॥
 दोहा—मिलै जो अच्छी वस्तु कहँ, सो संतन कहँ देहि ॥

होय न नीकी वस्तु जो, आपु सोइ हठि लेहि ॥३८॥
 एक समय बेटीको व्याहा । रह्यो पुत्र सब सहित उछाहा ॥
 मेवा अरु पकवान रचाई । एक कोठरी माहिं धराई ॥
 तारा दै ताकै इनकाहीं । वितरि देहि नहिं संतन पाहीं ॥
 रामदास वह साजु निहारी । संत योग्य गुणि होहिं दुखारी ॥
 एक दिवश कछु सूनो पाई । तारा खोलि लियो कर जाई ॥
 सकल साजु सो संतन बोली । मोटरी बांधि दियो नहिं खोली ॥
 वैसाहि तारा पुनि दै दीन्ह्यो । पुत्र पौत्र सुनि लखि दुख कीन्ह्यो ॥
 तारा खोलि निहारत भयऊ । वस्तु दशगुणी तहँ लखि लयऊ ॥
 ऐसो तिनको भाव अनूपा । मैं वर्णन कीन्ह्यो सुखरूपा ॥
 सूजाको दिवान अभिरामा । रह भगवंतदास यक नामा ॥
 वृंदावन वासिनकी सेवा । करै सतत तन मन धन तेवा ॥
 एक समय श्रीगुरु महाराजा । आये लीन्हें संत समाजा ॥

दोहा—तब भगवंत प्रमोद उर, मानि तिन्हें गृह लाय ॥

कह्यो नारिसों भेटदै, करु पूजा हरषाय ॥ ३९ ॥
 सुनि तोहिं तांय कही सुख छाई । संपति सब गुरुदेहि चढ़ाई ॥
 एक एक धोती भर राखी । होय न और वस्तु अभिलाखी ॥
 तब पत्नीको बहुत सराही । रामदास कह परम उछाही ॥
 यही बात मेरे मनमाहीं । रही कहों मैं साति तोहिं पाहीं ॥
 यह सलाह पति तियको जानी । अति प्रसन्नहैं गुरु विज्ञानी ॥
 प्रेम आंसु दोउ नयन बहावत । विदा न भये भये ब्रज आवत ॥

रामदास तब बहु पछिताना । वृंदावनको कियो पयाना ॥
 तहां दरशि गुरु संतसमाजा । सादर दीन्ह्यो मोद दराजा ॥
 फेरि गुरुको आयसु पाई । आवत भये अयन हरषाई ॥
 करि हरि भजन काल बहु टारी । अंत समय मनमाहँ विचारी ॥
 चलयो आगरेते ब्रज काहीं । आये आधी दूरि तहांहीं ॥
 कह्यो समीपी जनसों वैना । ममतनुयोगतुलसिवन हैना ॥

दोहा—मोको अब घर लैचलौ, जो वृंदावन माहिं ॥
 मरिहौं तौ सब लोग मम, तनु दाहिहैंतहांहिं ॥ ४० ॥
 कढ़िहै तनु दुर्गधिसो, लाल पियारी अंग ॥
 लगिहै सुनते भवनमें, लाये सहित उत्तंग ॥ ४१ ॥
 रामदास तनु त्यागिकै, दिव्य शरीरहि धारि ॥
 वृंदावनमें जायकै, हरि ढिग बसे सुखारि ॥ ४२ ॥
 भक्तमाल नाभा जुकृत, तामें कहे जे संत ॥
 तिनकोहों वर्णन कियो, कृपारुक्मिणीकंत ॥ ४३ ॥

इति श्रीसिद्धि श्रीमन्महाराजाधिराजबांधवेशविश्वनाथसिंहात्मजसिद्धि
 श्रीमहाराजाधिराजश्रीमहाराजाबहादुरश्रीकृष्णचंद्रक-
 पापात्राधिकारीश्रीरघुराजसिंहजूदेवरुतौश्रीरा
 मरसिकावल्यांभक्तमालायांकलियुग
 खंडेउत्तरार्द्धेएकोनचत्वारिंशदधि
 कशततमोऽध्यायः ॥ १३९ ॥

रामरांसेकावलों नाम भक्तमाला

संपूर्णा-

श्रीगणेशायनमः ।

अथ उत्तरचरित्र प्रारम्भः ॥



सोरठा—जय यदुवंशकुमार, जय रघुवंशकुमार जय ॥

जय जय अधम उधार, जय सर्वस रघुराजके ॥ १ ॥

दोहा—जय वाणी जय गजवदन, जय हरि गुरु पितु मात ॥

संतचरित रचिवे हितै, देहु बुद्धि अवदात ॥ १ ॥

ग्रंथ राम रसिकावली, चारिखंड निर्माण ॥

सतयुग त्रेता द्वापरहु, कलियुग खंड प्रमाण ॥ २ ॥

कलियुग खंडहि भाग किय, पूरव उत्तर दोय ॥

सादर सो वर्णन कियो, उत्तर चरित अब होय ॥ ३ ॥

सोरठा—श्रोता सकल सुजान, श्रद्धायुत सुनिये सुचित ॥

अबके भक्त बखान, मतिअनुसार करौं कछुक ॥ २ ॥

दोहा—श्रीकवीर इतिहासमें, वंश बघेल बखान ॥

वर्णन कीन्ह्यो मैं कछुक, राजाराम प्रमान ॥ ४ ॥

राजारामहि सुत भये, वीरभद्र बलवान ॥

भये विक्रमादित्य पुनि, पुनि अमरेश महान ॥ ५ ॥

भूप अनूप सुतासु सुत, भावसिंह सुत तासु ॥

तासु सूनु अनिकृद्ध भो, तेहि अवधूत प्रकाशु ॥ ६ ॥

प्रपितामह पुनि मोरभे, श्रीअजीत रिपु जीत ॥

तासु तनय जयसिंहभो, धर्म देव द्विज नीत ॥ ७ ॥

मम पितु ताके सुत विमल, विश्वनाथ अस नाम ॥

तिनके गुरु प्रियदास भे, भक्ति प्रेम रस धाम ॥ ८ ॥

सैली श्रेष्ठ कवीनकी, गुरुको गुरुहै जौन ॥

ताको चरित बखानिकै, कहै होय मति तौन ॥ ९ ॥

ताते प्रथमहि मैं कहौं, श्रीप्रियदास चरित्र ॥

जाहि सुनत जगजीव सब, होते परमपवित्र ॥ १० ॥

जो चरित्र प्रियदासको, मम पितु कियो वखान ॥
 तेहि अनुसर वर्णन करौ, सुनौ सवै दैकान ॥ ११ ॥
 व्यास सुवन शुकदेव उदारा । जो कीन्ह्यो भागवत प्रचारा ॥
 लियो सोकलियुगमहँ अवतारा । प्रियादास अस नाम उचारा ॥
 तामें प्रमाण—अवतीर्य शुकस्तत्र प्रियाचार्यो भविष्यति ॥
 इति भविष्यपुराणे ॥

सूरत नगर समीप सुहावन । रामपुरा थक ग्राम सुपावन ॥
 तामें वामदेव अस नामा । रह्यो एक द्विजवर मतिधामा ॥
 मतिअतिविमलअमलगतिताकी निशिदिनमतिहरिपदरतिछाकी
 रही तासु तिय गंगाबाई । सो हरिकृपा भक्ति वर पाई ॥
 तासु कुमार भये प्रियदासा । जासु सुयश जग कियो प्रकासा ॥
 बालहिंते हरि भक्ति उठाये । तृण सम जगत्विषय मन भाये ॥
 द्वादश वर्ष वयस जब वीती । बृंदावन दर्शन भइ प्रीती ॥
 तुलसी विपिन गये प्रियदासा । किये सकल वन दर्श विलासा ॥
 चंद्रलाल तहँ रहे गोसाई । देखहिं मनमोहन सब ठाई ॥
 महा रसिक हरि भक्ति उदंडा । जेहिं प्रभाव पूरित नवलंडा ॥
 दोहा—तिनके निकट सिधारिकै, लियो मंत्र उपदेश ॥

श्रीराधापति पद सुरति, कियो अनन्य हमेश ॥ १॥
 लै उपदेश गये घर स्वामी । सेवाहिं साधु सत्य निष्कामी ॥
 नित प्रति मन वर्तहिं बैरागा । रहहिं उदास चहैं जग त्यागा ॥
 पिता मातु जबगे हरिधामा । भये विरक्त त्यागि धन धामा ॥
 मन गुणि हरि सबकी सुधि लेहीं । देखहुँ मोहिं किमि भोजन देहीं ॥
 निर्जन गिरिवर गुहा निहारी । रहे तहां हरिपद चित धारी ॥
 भोर गोविंद वणिक तनु धारी । आय अहार दीन सुखकारी ॥
 तीजे दिन वृषभानुकुमारी । आय दीन दधि क्षीरहँकारी ॥

कह्यो विहँसि राधिका सुवयना। यह अचरज मोहिं दीसत नयना॥
 करहिं सकल स्वामीकी सेऊ। तुम स्वामीते सेवा लेऊ ॥
 सुनत वचन नयनन जल आये। राधा पदपंकज शिरनाये ॥
 धै स्वामिनिकी सीखहि शीशा। वृंदावन गे ध्यावत ईशा ॥
 तहँ विद्या पढ़िकै सुखदाई। छके रास सुख कछु न सोहाई ॥
 दोहा—मग्न भजन निशिदिन रहैं, कहहिं न कोहु सों भेव ॥

येक दिवश तब ध्यानसे, कह्यो आय यदुदेव ॥२॥
 करेहु जौन हित जन्म तिहारो। विचरि जगत् सब जीव उधारो॥
 लै आज्ञा वदरीवन आये। व्यासदेवके दर्शन पाये ॥
 तिनसों पढ़ि भागवत पुराना। रामेश्वरको कियो पयाना ॥
 सब तीरथ करि दक्षिण केरां। कावेरी तट कियो वसेरा ॥
 द्वारावती दरश पुनि कीन्ह्यो। यक पुर भूप धर्म प्रद चीन्ह्यो॥
 तेहिपुरप्रभु यकनिशा वितायो। राजा सुनत दरशहित आयो॥
 महा प्रभावजानि सत्कारचो। प्रियादाससो तुच्छ विचारचो॥
 चले निशा उठि भूप न जाना। सूझत नहिं मग तम अधिकाना
 तासु कोट ढिग निकसे आई। पहरी टेरे रहे चुपाई ॥
 जानि चोर पकरे सबधाई। बाँधे कर पग रज्जु दृढ़ाई ॥
 डारि दियो खनि खात महाई। भजैं सुचित तहँ कुवँर कन्हाई ॥
 जागत भयो भोर भूपाला। नाथ गमन सुनि भयो विहाला॥

दोहा—ढूँढ़न निकस्यो सैन्य लै, चढ़े बड़े गजराज ।

चहुँ दिशि खोजनके लिये, दौरी मनुज समाज ॥३॥
 ढूँढ़े भटकि नहीं प्रभु पाई। राजहि ज्वाबदिये फिरि आई॥
 भूपहि खबरि दियो कोतवाला। रैन चोर यक खातहि डारा ॥
 भूपति जाय चीन्हि दुख कीन्ह्यो। त्राहि त्राहि करि पदशिरदीन्ह्यो
 भवन लाय आसन बैठायो। प्रभु तेहि पूरण ज्ञान सिखायो॥

रक्षक सूरी देन पठाये । स्वामी रक्षक सकल बचाये ॥
तहँते चलि गमने यक ग्रामा । यकबटतरु तर कियविश्रामा ॥
बरजे लोग सहित अनुरागै । यहि बट विटप निकटअहिलागै
प्रभु कह सब थल रक्षक रामा । जहँनहिँप्रभुअस नहिँकहुँ ठामा
धायो भुजँग कुपितनिशि माहीं । मारचो यक विलार तेहिँकाहीं
भोर प्रभाव मच्यो सब गाऊ । आये सबै मनुजतरु ठाऊ ॥
तौन ग्रामको ठाकुर आयो । प्रियादास पदमो शिरनायो ॥
नाथ कियो निर्विष ममग्रामा । जिमि कालीकाढ्यो घनश्यामा ॥

दोहा—रहो कछुक दिन नाथ इत, हम सब होयसनाथ ॥

राखि मान तेहि चलतभे, गये देश यक नाथ ॥ ४ ॥
रहैं महाजड़ तहां अहीरा । तहँको नृप नेसुक मतिधीरा ॥
सो चह नृप सुधरहि किमिदेशा । स्वप्ने हरि तेहिँ दियोनिदेशा ॥
आवत संत एक मम रूपा । सोसब देश सुधारी भूपा ॥
तेहि मुखसुनि भागवत सप्रीता । होय भक्ति सब देश पुनीता ॥
एकादशि दिनगे प्रियदासा । भूपति आय मिल्यो सहुलासा ॥
तेहिँ सुनाय भागवत पुराना । कीन्ह्यो देश भक्त भगवाना ॥
पुनि द्वारका सिधारि सुखारी । जगंनाथ दर्शन पगु धारी ॥
पुनि गंगासागर महँ न्हायो । तहँ यक वणिक आयशिरनायो ॥
वणिक कह्यो भोजन भो नाहीं । तिनकह भोजन रहै सदाहीं ॥
तीनि दिवश यहि विधिगेवीती । तबहरि द्विज वपु धरचोसप्रीती
कह्यो वणिक सों चलिघर बाता । वृत्ति अयाचक इनकीताता ॥
तुमसों बनी न कछु सेवकाई । जाय साधु कहँ देहु खवाई ॥

दोहा—लै भोजन द्रुत वणिक तब, हरि प्रसाद करवाय ॥

कहि प्रसाद दीन्ह्यो प्रभुहि, सादर निज शिरलाइ ॥ ५ ॥

वनिजारनके संग में, मम प्रभु रीवा आय ॥

तीरथपति मज्जन हितै, गमने हर्ष बढ़ाय ॥ ६ ॥

तीरथराज नहाय कै, मथुरा मंडलजाय ॥

तीनि वर्ष तहँ वसतभे, मम गुरु संग सोहाय ॥ ७ ॥

बहुरि जरौली गाँव यक, अंतर्वेदहि माहि ॥

यमुना तट शोभा सदन, दर्श करत अब जाहि ॥ ८ ॥

तहां कियो प्रियदास निवासा । ध्यावत राधा रमण सुरासा ॥

परमहंस तहँ राम प्रसादा । पूरण साधुन वाद विवादा ॥

तामुख सुनि रामायण नीको । सर्व जगत सुखहित सबहीको ॥

तेहि भागवत सुनाय बहोरी । बढ़ी परस्पर प्रीति नथोरी ॥

तिन स्थल निज भेंटचढ़ाये । जफराबाद नाथ पुनि आये ॥

देश जरौली दुष्ट अनेका । चोर विमुख हरिविगत विवेका ॥

ते जन प्रभुकर दर्शन पाई । हरिजन भये त्यागि कुटिलाई ॥

प्रियादास कर चरित अनेका । कहहि परस्पर जन एकएका ॥

ते सब जुरि जुरि दर्शन करहीं । दर्श करत हरिपद रति भरहीं ॥

करनहेतु बहु जीव उधारा । भक्तिदान तहँ दियो अपारा ॥

करहि जे प्रियादास सत्संगा । तेरंगि जाहि रामके रंगा ॥

नाम सराय चतुर्भुज गाऊं । एक समय आये तेहिं ठाऊं ॥

दोहा—तहां रहै यक साधु कोउ, नाम उजागर दास ॥

श्वेतकुष्ठप्रभु तनु निरखि, कीन्ह्यो विनय प्रकाश ॥ ९ ॥

जड़ी एक जानी प्रभु मेरी । मलत हनत तनु रोगन ढेरी ॥

विहँसि कह्यो प्रभु होय न रोगा । हरि इच्छाते भोगहि भोगा ॥

वाके मन विश्वास न आयो । तब गंगाजल नाथ मँगायो ॥

लियो चुपरि अपने तनुमाहीं । श्वेतवर्ण रहिगो तब नाहीं ॥

पुनि जसको तस रोग बनायो । तब विश्वास ताके मन आयो ॥

तहँ कोउ जर्मादार सुतकाहीं । लग्यो प्रेत छोंडै तेहि नाहीं ॥

मंत्र यंत्र बहु तंत्रन झारे । छुट्यो न प्रेत उपाय हजारै ॥
तब प्रभु पास लाय सुतकाहीं । परचो पिता रोवत पद माहीं ॥
नाथ कह्यो मैं मंत्र न जानो । सुनो जो प्रेतहि वचन वखानो ॥
अस कहि कह्यो प्रेत कह वानी । तुमहि न लागति योनि गलानी ॥
प्रेत कह्यो अबलों यहि हेता । रह्यो सतावत जीव निकेता ॥
मिलैं जो कबहूँ संत उदारा । तौ हठि मेरो करैं उधारा ॥

दोहा—कलि जीवन निस्तार हित, लीन्ह्यो प्रभु अवतार ॥

करहु कृपा अब दीन लखि, जेहि मम होय उधार १० ॥

विनय दीन सुनि मन हर्षायो । तासु उधारन हित चित लायो ॥
कही प्रेत सों मंजुल वाता । अमिली तरु वसिये दिन साता ॥
प्रेत त्यागि तेहि अमिली माहीं । वसतभयो गति पावन काहीं ॥
बांचनलगे नाथ सप्ताहा । भयो समापत जेहि दिन माहा ॥
तेहि दिन विटप बरचो करि ज्वाला । गयो प्रेत जहँ देवकिलाला ॥
धाये जन गुणि पावक लागी । जाय तहां नहि देखे आगी ॥
बूझि नाथसों सुधि सब पाई । जय जयकार कियो सुख छाई ॥
प्रियादास पर फूलन वर्षे । प्रेत मुक्त गुणिअतिशयहर्षे ॥
बढ्यो चहूँदिशि महा प्रभाऊ । यह करणी अति सरल स्वभाऊ ॥
एक समय प्रभु विचरन हेतू । गये फतेपुर कृपानिकेतू ॥
तहँ देवी मंदिर किय डेरा । देवीरैन प्रत्यक्षहि टेरा ॥

दोहा—रह्यो अयोध्या नगर इत, अति पुनीत केहुँकाल ॥

करहु रामलीला इतै, लखि जन होयँ निहाल ॥११॥

देवी वचन सुनत अघहारी । तहां रामलीला विस्तारी ॥
राम गमन वनकी भइ लीला । पुरनरनारि कुमति शुभशीला ॥
सत्य सत्य सब रोदन कीन्हे । भोजन पान त्यागि सब दीन्हे ॥
जो दशरथको रूपहि भयऊ । सो सति त्यागि देह निज दयऊ ॥

जब पुनि भयो राम अभिषेका । तब अँगरेजहु कियो विवेका ॥
 साहेब सब निज ठाकुर जानै । रामनिसाफ करै सोइ मानै ॥
 राम जौन जेहि दियो रजाई । सो सबशिरधारि करै सदाई ॥
 अचरज फैलि रह्यो पुरमाहीं । सकल प्रशंसैं जन प्रभुकाहीं ॥
 एक समय वृंदावन आये । दै भंडारा संत बोलाये ॥
 आपहु निजकर परसन लागे । अतिशय साधु सेव अनुरागे ॥
 तब यक संत कह्यो अनखाई । कोढीकर छुआ को खाई ॥
 तब प्रभु गये भवनके भीतर । सकल संत तेहि कह्यो अनूतर ॥

दोहा—सकल महात्मा साधुको, बोलवायो करि प्रीति ॥

आये प्रभु सुंदर वरण, लखि सब किये प्रतीति ॥१२॥
 करि भोजन जब गे निज गेहू । तब जसकी तस कीन्ही देहू ॥
 चित्रकूट यक अवसर आये । भरत कूप युत जनन नहाये ॥
 जब अनसुइयातेइ जन आये । तहाँ नाथको दर्शन पाये ॥
 परचो बहुत कहाँलुगि गाऊं । चरित एक अब और सुनाऊं ॥
 चले अमरकंटक प्रियदासा । रीवाहै निकसे मग आसा ॥
 श्रीजयसिंहपितामह मोरा । छायो जासु सुयश चहुँ ओरा ॥
 रीवाहै बघेल रजधानी । बसत रह्यो जयसिंह गुखखानी ॥
 तिनेके तीनि पुत्र सुखदाता । मम पितु औ पितृव्य दुइ भ्राता ॥
 जेठे विश्वनाथ पितु मेरे । फहरत जिन पताक यश केरे ॥
 लक्ष्मणसिंह मांझिले नामा । पुनि बलभद्रसिंह मतिधामा ॥
 सुन्यो कान प्रियदास सिधाये । तीनिहुँ सुत युत राजा आये ॥
 श्रीजयसिंह नरेश सुजाना । करि प्रसन्न स्वामी सन्माना ॥

दोहा—राखन हित राजा गह्यो, पद बहु विनय वखानि ॥

सकल रीति विपरीति लखि, प्रभुहि ननेक सोहानि ॥१३॥
 रीति रही पूरब यह राजू । लूटै प्रजन मनुज विन काजू ॥

बोलैं झूठ सकल अज्ञाता । ब्राह्मण करै निजातम घाता ॥
 देखि दशा प्रभु कियो विचारा । यह वघेल कुल अति उजियारा
 बहु राजा भे यहि कुल हूरे । समर शूर दाता गुणपूरे ॥
 विपुलवार कोटिन करि दाना । यश लिय करि याचक सन्माना
 बादशाह जब विपति सतायो । तब तब यहि कुल आय वितायो
 सेनभक्त बांधवमहँ भयऊ । नृप रामहि हरि दर्शन दयऊ ॥
 तेहि कुल सोह न यह अनरीती । काल कर्म गति भै विपरीती ॥
 यह प्रभु कीन्ह्यो मन संकल्पा । राजासों नाहिँ कीन्ह्यो जल्पा ॥
 गये अमर कंटक तेहि पंथा । दीन्ह्यो कछु न धर्मकर संथा ॥
 प्रभुके लागिगई मनमाहीं । दिये भक्ति विन बनतो नाहीं ॥
 लहैं वघेल भक्ति उपदेशा । भक्ति प्रचार होय सब देशा ॥

दोहा—जब जब इत है कहैं प्रति, तीरथ हेतु नहान ॥

तब तब भूपहि सुतन युत, देहिं दरश सविधान ॥ १४ ॥
 कई बार दै दरश सोहाये । सहज सहज हरि ओर लगाये ॥
 श्रीजयसिंह भूप यक वारा । गयो प्रयाग सहित परिवारा ॥
 तहां जाय प्रभु दर्शन पायो । तीनों सुत युत मोद बढ़ायो ॥
 विश्वनाथ जेठो सुत जोई । प्रभुसों कह्यो यकांतहि रोई ॥
 मंत्र देहु मम करहु उधारा । नातो कब छूटी संसारा ॥
 प्रभु कह शिष्य करैं नहिं काहू । पै तेरो होई निर्बाहू ॥
 एक बार पुनि तीनिउँ भाई । दरश कियो मिरजापुर जाई ॥
 तहां यकादशि वरत बतायो । भक्ति बीज शुभ खेत बोवायो ॥
 पुनि प्रभु चले नर्मदा काहीं । रीवां बाम छोड़ि पथमाहीं ॥
 ग्राम सेमरिया महँ जब आये । विश्वनाथ दर्शन हित धाये ॥
 विनय कियो रीवां पगुधारो । तब प्रभु कह्यो बहुरती बारो ॥
 मुरके जबै नर्मदा न्हाये । स्वामि अमर पाटन जब आये ॥

दोहा—प्रियादासकी पाय सुधि, मोदित तीनों भ्रात ॥

दरश हेतु तहँ जायकै, पकरे पद जलजात ॥ १५ ॥
 करि विनती रीवां पुनि लाये । सब पंडित मिलि वाद बढ़ाये ॥
 समाधान साधारण कीन्हें । प्रभुको अति प्रभाव सब चीन्हें ॥
 एक समय मम पितु कह वानी । विन उपदेशे लगति गलानी ॥
 नाथ कह्यो तबसुनु विशुनाथा ॥ करिहै शिव तोहिं अवशि सनाथा ॥
 तेहि निशि मम पितु जब घरमाहीं । सोवनलागे दुचित तहांहीं ॥
 राम मंत्र लिखि दर्पण सुंदर । स्वप्न माहिं उपदेश्यो शंकर ॥
 कहैं न काहू सों शिव भाषा । गुरुसों सविधि लेन अभिलाषा ॥
 एक समय यकंत महँ स्वामी । मम पितुसों कह अंतय्यामी ॥
 जौन मंत्र शिव स्वप्ने दीन्ह्यो । सो निज मुख उच्चारण कीन्ह्यो ॥
 पुनि अस मंजुल वचन सुनायो । यही मंत्र शंकर सों पायो ॥
 राम मंत्र जो दियो इशाना । सो प्रभु मुख सुनि अपने काना ॥
 अचरज मानि गह्यो पदकंजन । दीजै सविधि मंत्र भवभंजन ॥

दोहा—प्रियादास बोले वचन, कीन्हे परमसनेह ॥

होनी रही सो ह्वै गई, जनि कीजै संदेह ॥ १६ ॥
 अस कहि तीरथ करन कृपाला । जात भये ध्यावत नैदलाला ॥
 एक बार दक्षिण पगु धारे । रीवां तजि पश्चिम पथ धारे ॥
 जयसिंह सुत मम पितु तिन भ्राता । लक्ष्मण सिंह नाम अवदाता ॥
 माधवगढ़ तिनको पुर रहेऊ । तेहिं परगन ह्वै प्रभु पथ गहेऊ ॥
 हाटीग्राम जबै प्रभु आये । सकल देश वासी तब धाये ॥
 दर्शन करि सब शोर मचाये । परगट कपिलदेव मुनि आये ॥
 मम पितृव्य लक्ष्मणसिंह गयऊ । प्रभुहिं चीन्हि अति मोदित भयऊ ॥
 विनय कियो प्रभु रीवाहिं चलियो । चरण सलिल दै कलिमल दलियो ॥
 प्रभु कह दक्षिण यात्रा करिकै । ऐहाँ रीवैं अति सुख भरिकै ॥

अस कहि दक्षिण यात्रा कीन्ह्यो । आय बहुरि रीवैं सुख दीन्ह्यो ॥
हरिविमुखी पंडित पुर केरे । वादविवाद कियो बहुतेरे ॥
सबको समाधान करि दीन्ह्यो । प्रभु प्रभाव सब हरिको चीन्ह्यो ॥

दोहा—मम पितु अरु पितृव्य दोउ, तिनको निकट बोलाय ॥

आमिष अरु मछरी भखन, दीन्ह्यो सकल छोंड़ाय १७ ॥
फेरि कह्यो मम पितु विशुनाथै । मंदिर रचि थापै रघुनाथै ॥
जाय प्राग पुनि ग्रंथ बनायो । सिद्धांतोत्तम नाम धरायो ॥
वाणी सरल गूढता तामें । पढ़हि लोग समुझैं समुझामें ॥
पुनि मम दोउ पितृव्य सुजाना । लक्ष्मण अरु बलभद्र प्रधाना ॥
शिष्य होन हित विनय सुनायो । प्रभु एकांत बोलि समुझायो ॥
मैं नहिं करौं शिष्य करनाऊं । पै अपने सम बोलि पठाऊं ॥
तिनके शिष्य होहु दोउ भाई । भक्ति भेद सो सकल बताई ॥
मेरो गुरुसुत बुद्धि विशाला । नाम जासुहै मोतीलाला ॥
अस कहि ब्रजको पत्र पठायो । मोतीलाल तुरत बोलवायो ॥
लक्ष्मण अरु बलभद्रहु काहीं । शिष्य करायो रीवांमाहीं ॥
मम पितु विश्वनाथ कर जोरी । कह्यो नाथ अबका गति मोरी ॥
प्रभु कह तोपर करि मैं दाया । स्वप्ने जो उपदेश बताया ॥

दोहा—सोइसत्य माने रहो, किये रहो गुरुभाव ॥

अवशि तोहिं मिलिहैं हरी, यामें नाहिं दुराव ॥ १८ ॥
प्रगट मंत्र दीन्हें तोहिं दासा । होय उपद्रव इत अनयासा ॥
मम पितु अति आनंदित भयऊ । प्रभुमहँ ईश्वर भावहि कियऊ ॥
पुनि जे राजगुरु द्विजराई । अग्निहोत्री नाम कहाई ॥
श्रीबलभद्र आदि द्विज केते । सम्मत कीन्ह्यो मिलि मिलि तेते ॥
राजगुरु हमहीं कहवाये । वृत्ति मंत्र दीवे की पाये ॥
प्रियादास सो मंत्रहि दैकै । हरत मंत्र हमरी क्षय कैकै ॥

अस विचारि सिगरे द्विजराजा । लगे मरन निज जोरि समाजा ॥
 परचो राजगृह महँ संकेता । सुमिरैं सिगरे कृपानिकेता ॥
 प्रियादास सुनि यह संदेहू । गये अग्निहोत्रिनके गेहू ॥
 कह्यो मंत्र में देहों नहीं । राजद्वार तुम मरौ वृथाहीं ॥
 पै जो मंत्र देन में चैहों । स्वप्ने माहँ काह करि लैहों ॥
 तिनमें श्रीवलभद्र सुज्ञानी । जन उपकारक वेद विधानी ॥

दोहा—सो प्रभुके पद परशिकै, कह्यो जोरि युग हाथ ॥
 जो भावै सो कीजिये, तुम समरथहौ नाथ ॥ १९ ॥
 मम पितु श्रीविशुनाथको, प्रियादास गुणि दास ॥
 तासु दिवान अयान अति, ताहि बोलायो पास ॥ २० ॥
 हरि विमुखी वेश्या निरत, सीवनराम दिवान ॥
 कह्यो ताहि गणिका तजौ, छूटी काम निदान ॥ २१ ॥

सो नाहिं वेश्या तज्यो अभागी । भयो न कछु हरिको अनुरागी ॥
 छूटि गयो कछु दिनमहँ कामा । भोदूलाल रह्यो मतिधामा ॥
 राज्यकार्य मम पितु तेहिं दीन्ह्यो । सो प्रभुको शासन शिर कीन्ह्यो
 धर्मरीतिसों राज्य सुधारा । अबलों जासु सुयश संसारा ॥
 नीति धर्ममें निपुण सोहाये । ताते स्वामीके मन भाये ॥
 पंडित यक नैआयकवादा । नाम जासु कामताप्रसादा ॥
 प्रभुकर किय कछु दिन सत्संगा । सो तजि न्याय रंग्यो हरि रंगा ॥
 नाथ गये कहँ तीरथ काहीं । मंदिर बन्यो अमहिया माहीं ॥
 आयगये प्रभु थोरेहि काला । पधरायो तहँ दशरथ लाला ॥
 रही चरण चौकी संकेता । सिय बैठन उपाय किय केता ॥
 सीता मूरति बैठी नाहीं । मम पितु कह्यो दुखित गुरुपाहीं ॥
 प्रियादास तुरतहिं तहँ आये । देखि जानकिहिं अतिसुख पाये ॥

अस विचारि सिगरे द्विजराजा । लगे मरन निज जोरि समाजा ॥
 परचो राजगृह महुँ संकेता । सुमिरैं सिगरे कृपानिकेता ॥
 प्रियादास सुनि यह संदेहू । गये अग्निहोत्रिनके गेहू ॥
 कह्यो मंत्र में देहों नहीं । राजद्वार तुम मरौ वृथार्हीं ॥
 पै जो मंत्र देन में चैहों । स्वप्ने माहँ काह करि लैहों ॥
 तिनमें श्रीवलभद्र सुज्ञानी । जन उपकारक वेद विधानी ॥

दोहा—सो प्रभुके पद परशिकै, कह्यो जोरि युग हाथ ॥

जो भावै सो कीजिये, तुम समरथहौ नाथ ॥ १९ ॥

मम पितु श्रीविशुनाथको, प्रियादास गुणि दास ॥

तासु दिवान अयान अति, ताहि बोलायो पास ॥ २० ॥

हरि विमुखी वेष्ट्या निरत, सीवनराम दिवान ॥

कह्यो ताहि गणिका तजौ, छूटी काम निदान ॥ २१ ॥

सो नहिं वेष्ट्या तज्यो अभागी । भयो न कछु हरिको अनुरागी ॥
 छूटि गयो कछु दिनमहँ कामा । भोदूलाल रह्यो मतिधामा ॥
 राज्यकार्य मम पितु तेहिं दीन्ह्यो । सो प्रभुको शासन शिर कीन्ह्यो
 धर्मरीतिसों राज्य सुधारा । अबलों जासु सुयश संसारा ॥
 नीति धर्ममें निपुण सोहाये । ताते स्वामीके मन भाये ॥
 पंडित यक नैआयकवादा । नाम जासु कामताप्रसादा ॥
 प्रभुकर किय कछु दिन सत्संगा । सो तजि न्याय रंग्यो हरि रंगा ॥
 नाथ गये कहुँ तीरथ काहीं । मंदिर बन्यो अमहिया माहीं ॥
 आयगये प्रभु थोरेहि काला । पधरायो तहँ दशरथ लाला ॥
 रही चरण चौकी संकेता । सिय बैठन उपाय किय केता ॥
 सीता मूरति बैठी नहीं । मम पितु कह्यो दुखित गुरुपाहीं ॥
 प्रियादास तुरतहिं तहँ आये । देखि जानकिहिं अतिसुख पाये ॥

दोहा—मोदक देहैं तोहिं बहु, हे मिथिलेश कुमारि ॥

अस कहिकै निज हाथते, सीतहि दियो पधारि ॥२२॥
 बैठिगई मूरति तेहिं माहीं । अचरज आयो सब जन काहीं ॥
 अवध अमहियाको दिय नामा । तहँकी सरिसरयू सुखधामा ॥
 कृष्ण कूप यक कूप बनायो । सुधा समान तासु जल आयो ॥
 लक्ष संतकी जुरी समाजा । आये नात जाति बहु राजा ॥
 लघु सरिता लखि जन अकुलाई । भयो समल जल पशि न जाई ॥
 प्रभुसों सब जन कहे दुखारी । नाथ पियेका विगरो वारी ॥
 बाढ़े आजु सुधारि जल जावे । ज्येष्ठ मास विश्वास न आवे ॥
 प्रभु कह कठिन रामकहँ नाहीं । हरि चाहे बनिहै क्षण माहीं ॥
 जेठमास तेहि दिन बिन वरषा । कीन्ह्यो सरित सलिल उत्करषा ॥
 बहिगो मल भो निर्मल नीरा । जयजयकार कियो जन भीरा ॥
 मम पितु अन्न अडार जुहायो क्रमक्रम ते सब जनन बटायो ॥
 यक द्विज क्षुधित घुस्यो तहँ पेली । दियो सिपाही ताकहँ रेली ॥

दोहा—सो फिरि आयो नाथ पहुँ, तब प्रभु चले रिसाय ॥

दौरि दूरिलों मम पिता, गिरयो चरणमें जाय ॥२३॥
 प्रभु कह जे तुव भृत्य अडारा । ते द्विजके बाधक अविचारा ॥
 जो तू देहि अडार लुटाई । तौ मैं फिरहुँ प्रीति अति छाई ॥
 मम पितु तुरतहि भटन बोलाई । दीन्ह्यो सकल अडार लुटाई ॥
 लाखन भिक्षुक लूटन लागे । जयजयकार मच्यो चहुँ भागे ॥
 पहर सवाउक लुट्यो अँडारा । तब मम पितु कहँ निकट हँकारा ॥
 प्रभु कह लूटब वारण कीजै । मैं प्रसन्न क्रम क्रमते दीजै ॥
 तब करि वारण लूटब काहीं । मम पितु समुझ्यो कागज माहीं ॥
 उठत रह्यो जितनो दिन एकू । तेतनाहिँ उठ्यो कम्यो नाहिँ नेकू ॥
 यक दिन मम पितु मातु सोहाये । हरि पूजन हित मंदिर आये ॥

पूजन करि पोशाक पहिराये । तीनहुँ मूरति अतर लगाये ॥
सीता नयन अतर लगि गयऊ । तब तेहिं आंसू आवत भयऊ ॥
विघ्न मानि पितु कह प्रभु पाहीं । प्रभु कह विघ्न अहै कछु नाहीं ॥

दोहा—रामजानकी लषणमें, ज्यों ज्यों करिहौ भाव ॥

त्यों त्यों दरशैहैं कला, दिन दिन दून उराव ॥२४॥
एक वधिर आयो तेहिं ठाई । कह्यो नीक मोहिं करौ गोसाँई ॥
प्रभु कह हम कछु मंत्र नजानैं । वैद्य निकट कहूँ करौ पयानैं ॥
मम पितु कह तैं कृष्ण कूपमें । मज्जन कीजै प्रेम रूपमें ॥
वधिर जाय तेहि कूप नहायो । कान वधिरता तुरत गवांयो ॥
पुनि सरिता महँ कमल बोवायो । अबलों फूलत अति छवि छायो ॥
द्वै ब्राह्मण पंढरपुर माहीं । प्रभु शिषि होन हेतु विलखाहीं ॥
द्विजन प्रेमवश गुणि उर जामी । गमने पंढरपुर कहँ स्वामी ॥
दोहुन द्विजन कियो उपदेशा । भोर होत आये यहि देशा ॥
प्रभु ढिग गे मम पितु त्रय भाई । मम पितु सों प्रभु कह करुणाई ॥
मैं तुव प्रेम विवशहौं भारी । उपदेशिहौं सुस्वप्न मँझारी ॥
अस कहि बहु धीरज प्रभुदीन्ह्यो । फिरि पंढरपुर गमनाहिं कीन्ह्यो
वहां जाय पुनि दोउ द्विजकाहीं । उपदेश्यो हरि मनु सुखमाहीं ॥

दोहा—नाथ पंढरी दरशिकै, देशहि दिय मुद गाथ ॥

विनय माल निर्माण किय, इतै ग्रंथ विशुनाथ ॥२५॥

एक निशामें आयकै, स्वप्ने में प्रियदास ॥

विश्वनाथ उपदेश दिय, सकल रीति हरि रास ॥२६॥

अतिशय मन आनंद रस पाग्यो भक्तिवृक्ष फूल्यो फल लाग्यो ॥

दक्षिणते पंडित यक आयो । विपुल वाद करि गर्व बढ़ायो ॥

खर्ग सो प्रभु ढिग पठवायो । देखि अशुद्ध ताहि बहरायो ॥

सो पठयो पुनि कोषहि कीन्हें । हरि खर्ग अशुद्ध करि दीन्हें ॥

तबहूँ मिटी न तेहि मति भोरी। शास्त्रार्थ मति कियो बहोरी ॥
 यक पंडित गोविंद सुनामा । अरु कामताप्रसाद ललामा ॥
 दोउ पंडित किय तेहि सँग वादा।मूत्र अचित चित करि मर्यादा॥
 दक्षिणको पंडित तब हाज्यो।पुनि नहिं ताकर उतर उचाज्यो
 जादिन भई अमहिया माहीं । रामप्रतिष्ठा सुख चहुँ चार्हीं ॥
 मम पितु विश्वनाथ कहँ बोली। सादर भाष्यो बात अतोली ॥
 आजुजागरणकी विधि होई । जागहु तुम कुटुम्ब सबकोई ॥
 मम पितु विश्वनाथ तब भाखो।प्रभु मम विनय हृदय यदि राखो॥

दोहा—कहहु कथा भागवतकी, होय कुटुंब पुनीत ॥

करौ जागरण कुटुमयुत,तुव मुख सुनिवे प्रीत॥२७॥
 तब प्रभु यह आधो श्लोका।व्याख्या सहित कह्यो हरि शोका॥

गच्छदेविब्रजंभद्रे गोपिगो भिरलंकृतं ॥

यह आधे श्लोकहि केरी । निशि भर व्याख्या भाष्यो ढेरी ॥
 दंड चारि रजनी रहि बाकी।तब मम पितु बोल्यो सुख छाकी॥
 औरहु आगे कहौ गोसाईं । समुझावहु मोहिं करि करुणाई ॥
 प्रभु कह यहि व्याख्या षट मासा।मैं कहिहौं तोहिं देत हुलासा॥
 तब पंडित सिंगरे शिरनाये । व्यास रूप तिनके मन भाये ॥
 पुनि मम जननीको ढिग आनी । कह्यो वचन करुणारस सानी॥
 पढ़े भागवत संयुत प्रीती । ऐहै तोहिं सत्य परतीती ॥
 हरि मंदिर सुंदर बनवावै । सीता राम तहां पधरावै ॥
 देवनाथ पौराणिक रूरे । प्रभु पद पंकज प्रेमहिं पूरे ॥
 ते भागवत विशेष पठैहैं । हेतु भाव ध्वनि अर्थ बुझैहैं ॥
 प्रभु शासन शिर धरि मम माता।पढ़्यो भागवत अर्थ विख्याता॥

दोहा—प्रभु प्रतापते मातु मम, अर्थ भागवतकेर ॥

पढ़्यो पक्ष दशपंच करि, वाद सुबुद्धि निवेर ॥२८॥

पिता जननि मम होतभे, प्रियादासके दास ॥
 नितप्रति आनंद लहतभे, ध्यावत यदुपति रास ॥ २९ ॥
 कह्यो फेरि विशुनाथ सों, काल कठिन गति देखि ॥
 पर वृंदावन जाइहों, यह तनुत्यागि विशेषि ॥ ३० ॥
 राधा बल्लभके विरह, मोसों रहो नजाय ॥

सूत्रभाष्य मोहि रह रचन, तुमहीं दियो बनाय ॥ ३१ ॥
 ऐसी मम पितु सों कहि गाथा । गये जरोलीको पुनि नाथा ॥
 चतुर मास व्रत करि सविधाना । वांचि सार्थ भागवत पुराना ॥
 यमुना तट निज आश्रम माहीं । संत समाज बैठि चहुँ वार्हीं ॥
 संवत बाण सात वसु एका । चैत्र वदी परिवा निशिनेका ॥
 बहु ब्राह्मणन तुरंत बोलायो । सबते गोविंद मंत्र जपायो ॥
 शिष्य भवानीदीनहि कीन्ह्यो । मम पितु तेहि आचार्या दीन्ह्यो ॥
 मंत्र दियो पुनि वैष्णवदासै । संत सेव वरण्यो इतिहासै ॥
 साधुसेव तेहि दिय अधिकारा कियो सिद्धि सब हन्यो खँभारा ॥
 पूरव मुख पदमासन करिकै । राधाकृष्ण शोर मुख भरिकै ॥
 भानु उदै स्वामी तनु त्यागा । देखि सबनको अचरज लागा ॥
 जेहि दिन त्याग्यो कुटी शरीरा । तेहि दिन वृंदावन महँ धीरा ॥
 सेवाकुंजमाहँ प्रभु बैठे । लखे जु केशवदासहु पैठे ॥

दोहा—नाती चेला जानिकै, केशवदास बोलाय ॥

कह्यो जरोली जाहु तुम, ते गमने शिरनाय ॥ ३२ ॥
 मम पितृव्य बलभद्रको, तेहि दिन रूप प्रदेखान ॥
 आयगये रीवां प्रगट, श्रीप्रियदास सुजान ॥ ३३ ॥
 मम पितु अरु पितृव्य दोउ, गे दर्शनके हेत ॥
 कह्यो वचन प्रियदास तब, मैं अब जाहुँ निकेत ॥ ३४ ॥
 जब तुम तीनिहुँ बंधु तनु, त्यागि ध्याय ब्रजनाथ ॥

तब मिलिहौं गोलोकमें, प्रगट पसारे हाथ॥३५॥
 यह स्वप्नो बलभद्र लखि, कह्यो सवन सों भोर ॥
 जानि गये सब नाथगे, जहँ वस नंदकिशोर ॥३६॥
 अमित चरित प्रियदासके, कहँलों कहों वखानि ॥
 नेसुक जो जानो रह्यो, सो वरण्यों सुखसानि ॥ ३७ ॥
 इति सिद्धिशीमहाराजाधिराजश्रीरघुराजसिंहनूदेवकृतेश्रीरामर
 सिकावल्यांकलियुगखंडेउत्तरचरित्रेप्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

दोहा—प्रियादासको शिष्य वर,विश्वनाथ पितु मोर ॥
 तासु चरित वर्णन करत, लगति लाज नहिं थोर॥१॥
 पै लखि भक्तन संप्रदा, हुलसति अति मति मोरि ॥
 भक्त चरित वर्णन करौं, करौं कछू नहिं खोरि ॥ २ ॥
 जग जाहिर हरिजन जनक, चरित कहों जो नाहिं ॥
 तौ सज्जन सब दूषिहैं, बांचि ग्रंथ मोहिं काहिं ॥ ३ ॥
 मम प्रिय मम पितु परमप्रिय,खास कलम युगलेश ॥
 सो वरण्यो मम पितु चरित, जौन भयो जेहिं देश॥
 मतिऽनुसार वर्णन करौं, तौन ग्रंथ अनुसार ॥

सावधान श्रोता सुनहु, संत चरित सुखसार ॥ ५ ॥
 लिख्यो भविष्य पुराणहिं माहीं । प्रियाचार्य ह्वैहै कलिमाहीं ॥
 सो करिहै जीवन उद्दारा । तासु होइ यक शिष्य उदारा ॥
 नाम रोमहर्षण अति पूता । वरण्यो जेहि पुराण पितु सूता ॥
 सोइ रोम हर्षण विज्ञाता । पायो हलधर कर कुश घाता ॥
 सोइ रोमहर्षण कलिकाला । भोमो पितु विशुनाथ भुआला॥
 अष्टादश षट चालिस साला । माधव सित चौदशि शुभकाला॥
 लियो जन्ममो पितु विशुनाथा । रीवां नगर महामुद गाथा ॥

आह्निक तासु रह्यो यहि भांती । चारि दंड बाकी उठि राती ॥
 करै भावना ध्यानहि माहीं । सखी रूप सिय रामहि काहीं ॥
 ध्यानहि महुँ सब कृत्य करावैं । चारि दंड यहि भांति बितावैं ॥
 आह्निक श्री सीतापति केरो । कराहीं भावना वेद निवेरो ॥
 चारि ध्यान निशि दिनमें करहीं । भव वासना सकल परिहरहीं ॥
 दोहा—एक समय विशुनाथको, स्वप्ने शंकर आय ॥

राम षडक्षर मंत्रको, दीन्ह्यो कर्ण सुनाय ॥ १ ॥

प्रियादास भगवान बपुश्यो, एक समयपुनि आय ॥

उपदेश्यो सोइ मंत्रको, तेहि एकांत लैजाय ॥ २ ॥

ग्रंथ विनय माला निर्माण्यो । प्रियादासको हरिवपु जान्यो ॥
 पुनि मंदिर सुंदर बनवायो । सीता राम तहां पधरायो ॥
 करै रामलीला मधु मासा । कहूँ कहूँ होय प्रत्यक्ष तमासा ॥
 अवध नगर गवने एक काला । बोलि स्वप्न महुँ रघुकुल वाला ॥
 दीन्ह्यो चक्र प्रचंड प्रकाशा । कह्यो तोहिं रक्षी सब आशा ॥
 जागि प्रकाश लख्यो निज शीशा । मान्यो पूरकृपा निज ईशा ॥
 पुनि रामायण विमल बनायो । सादर सब साधुन बटवायो ॥
 पुनि चलि चित्रकूट एक काला । पुरश्चरण तहँ कियो विशाला ॥
 लख्यो स्वप्नमहुँ एक निशिमाहीं । सखी रूप चलि गोपुरकाहीं ॥
 सीताराम रासजहँ होतो । महामोद छनछनहि उदोतो ॥
 सखीरूप तहँ आप सिधाई । रहनलग्यो महुँ सुख छाई ॥
 पुरश्चरणको यह फल पाई । दै दक्षिणा द्विजन समुदाई ॥

दोहा—आयो पुनि रीवा नगर, राम रंग महुँ छाकि ॥

पार्षद वपु मानत निजै, रहनलयो प्रभु ताकि ॥ ३ ॥

ठाकुर गांव सेमरियाकेरो । एक जगमोहसिंह निवेरो ॥
 सम पितु पर कृत्या करवायो । आधी निशि प्रकाशकरिधायो ॥

कोउ कह स्वप्न माहँ ढिगआई । कृत्यानल आयो दुखदाई ॥
 स्वप्नहि उठि विशुनाथ भुवाला । लख्यो पूर्वदिशि भाशकराला ॥
 होत सहसकुलिशनकरपाता । दमकि रही दामिनी अघाता ॥
 यतने महँतोहि मंदिर तेरे । कढ़े कुवँर द्वै दशरथ केरे ॥
 दियो पूर्व दिशि बाण चलाई । कृत्यानल सब गयो विलाई ॥
 स्वप्न माहँ प्रभु शासन दीन्ह्यो । क्यों नहि ग्रंथ संस्कृत कीन्ह्यो
 तब संगीत रघुनंदन ग्रंथा । रच्यो राम सिय राससुपंथा ॥
 बहुरि राम आह्निक निर्माण्यो । निशि दिन चरित रामजोठान्यो
 शासन दीन्ह्यो राम बहोरी । भाषा रचहु कीर्ति सब मोरी ॥
 तब नाटक गीतावलि आदिक । रच्यो ग्रंथ साधुन अहलादिक ॥

दोहा—एक समय हनुमंत मिलि, स्वप्ने मोदवढाय ॥

श्रीरघुनंदनको तहाँ, दीन्ह्यो तुरत मिलाय ॥ ४ ॥

द्विजमिश्रकाचार्य विज्ञानी । तिनसों श्रुतिको अर्थ वखानी ॥
 ग्रंथ सर्व सिद्धांत अनंता । रच्यो परंतु सकल सियकंता ॥
 कियो रामजप गंगा तीरा । अनाचार किय विप्र अधीरा ॥
 स्वप्न माहँ प्रभु ताहि बतायो । सो विशुनाथ हि सत्य देखायो ॥
 एक समय विशुनाथ नरेशा । गमनत भयो जिरौहा देशा ॥
 मारि शत्रु सो मुलुक छोड़ायो । तबते पुरश्चरण करवायो ॥
 तहँ देवी धारि रूप कराला । आई जहँ विशुनाथ भुवाला ॥
 कह्यो तोहि को रक्षणहारा । मानउतारन मम अधिकारा ॥
 तहँ मूरति यक पवनपूतकी । रही सो निकट सनेह सूतकी ॥
 सो प्रत्यक्ष चलि कह विशुनाथै । मति भय कर मम कर तुवमाथै
 पितु कह जो रक्षक तुम मेरे । तहँ कहा कीन कोहु केरे ॥
 एक समय पुनि आई कवीरा । कह्यो वचन पितुसों मतिधीरा ॥

दोहा—दुष्ट शिष्य मम ग्रंथ को, दीन्ह्यो अर्थ विगारि ॥

बीजक तिलक बनाव मम, दीजै अर्थ सुधारि ॥

बीजक तिलक बनावन लागे । तब द्वै सत्संगी दुख पागे ॥
 पंडित धौकलसिंह चंदेला । दूसर फत्तेसिंह बघेला ॥
 कह्यो आप का भूप बनावो । क्यों कबीर पंथी कहवायो ॥
 पितु कह है मोहिं राम रजाई । ताते मैं यह देहु बनाई ॥
 दोउ कह तुम नृप करहु बहाना । पितु कह जो शासन भगवाना ॥
 तुमहीं परी निशा महुँ जानी । सोवहु नेम सहित दोउ ज्ञानी ॥
 तेहिनिशि दोउ कहैं कहर घुनाथै । सत्य मोर शासन विशुनाथै ॥
 ते दोउ आय शशि पदनाये । बीजक तिलक नरेश बनाये ॥
 एक दिन हरि व्यारी करवाई । पूजक बीरी दियो नजाई ॥
 राम स्वप्न महुँ कह पितु पाहीं । बीरा आजु लहे हम नाहीं ॥
 तुरतै जागि कियो तहैं कीका । बीरा भोग लग्यो नहिं ठीका ॥
 महाराज जयसिंह महाना । विश्वनाथको पिता सुजाना ॥

दोहा—मरण समय जेहि प्रागमें, द्वादश हस्त सिधारि ॥

अगवानी गंगा लई, विन वर्षा बढि वारि ॥

राधाकृष्ण मूर्ति तिन पूजी । जिनके सम सुंदर नहिं दूजी ॥
 तिनको प्रागहि चह पधराई । तबते कह्यो स्वप्न महुँ आई ॥
 हम चलिहैं अब संगहि तेरे । इतै रहन अभिलाष नमेरे ॥
 तब लै राधा कृष्णहि जोड़ी । थाप्यो रीवाउर सुखवोड़ी ॥
 एक समय आयो एक संता । लीन्हे शालिग्राम अनंता ॥
 तिनमें एक मूर्ति पितु मांग्यो । सो नहिं दीन्ह्यो अमरषराग्यो ॥
 मूरति लै गमन्यो पुनि जबहीं । स्वप्ने महुँ भाषे हरि तबहीं ॥
 मोहिं महीप समीप न देहै । तौ तैं जरा मूर सों जैहै ॥
 तो कहैं कह्यो भूप असवानी । द्वै शत मुद्रा देहों ज्ञानी ॥

जो तैं लेहै एकौ पैसा । तौ होई तुव अवशिअनैसा ॥
भोर लौटि साधू सो आयो । मूरति दै अस वचन सुनायो ॥
मुद्रा द्रैशत हम नहिं लेहैं । विना मोल मूरति तोहिं दैहैं ॥

दोहा—पितु लै मूरति शिर धरयो, चक्र चिह्न दर्शाय ॥

रासविहारी नाम तेहि, राख्यो प्रीति बढाय ॥ ७ ॥

एक समय पितुसों कह्यो, फत्तेसिंह बघेल ॥

राम कृष्णमें भेदहै, यामें करहु न खेल ॥ ८ ॥

तब पितु कह नहिं भेदहै, रामकृष्णके रूप ॥

देखिलेहु कहुँ जायकै, प्रभुकी मूर्ति अनूप ॥ ९ ॥

जाय अमहियाभवनमें, रामचंद्रको देखि ॥

पुनि लीन्ह्यो सोइ मूर्तिको, कृष्ण स्वरूप परेखि १० ॥

फत्तेसिंह कह सत्य यह, करिये आप वखान ॥

प्रभु परंतु कलिकालमें, है आश्चर्य्य महान ॥ ११ ॥

एक समय बैठे महाराजा । गिरी गाज करि घोर गराजा ॥

भयो भवन ऊपर षट टूका । परो नगर चहुँदिशि जनु लूका ॥

एक टूक भीतर कटि आयो । सो कटिगयो तेज नहिं छायो ॥

लियो राखि रघुकुल महाराजा । दीनदयालु गरीब नेवाजा ॥

एक समय ज्वर पीड़ित भयऊ । पूजापाठ बहुत विधि ठयऊ ॥

तब रघुनंदन शासन दीन्ह्यो । तुम कत ठन ठन मन ठन कीन्ह्यो ॥

मस्तक दिशि हनुमत पुनि आये । कह्यो सोऊ दुख देत मिटाये ॥

पितु उठि भोर पुजनकी साजू । दिय फेंकवाय विचारि अकाजू ॥

तेहिं निशि आय कह्यो हनुमाना । तोर अमंगल सकल पराना ॥

सूत्रभाष्य पुनि मम पितु कीन्ह्यो । हरिभक्तन विप्रन कहैं दीन्ह्यो ॥

एक समय पुरमहँ अति घोरा । मारि उपद्रव भयो न थोरा ॥

जौनि मूर्ति पूजै पितु मोरा । जनकनंदिनी अवध किशोरा ॥

दोहा—राख्यो तिनको नाम अस, कौशल राजधिराज ॥

तासु पुजारी मरिगयो, तुलसीराम विराज ॥ १२ ॥

पितुहिं भयो अतिशय संदेहा । प्रभु पूजक छूटी किमि देहा ॥
कह्यो राम स्वप्नेमहँ आई । यह पूजक विधि दियो नशाई ॥
मोकहँ सब देवनके पीछे । बैठायो प्रभु करि नहिं ईछे ॥
सोइ अपराध मरयो यहि काला । मति कीजे संदेह भुवाला ॥
पितु उठि भोर नाम जेहिगणपति । सौँप्यो पूजनगुणि तेहि शुभमति ॥
सो अबलों प्रभुकेर पुजारी । बनो अहै नृप कृपाधिकारी ॥
जगन्नाथ एक समय सिधाई । पितुको दीन्ह्यो स्वप्न देखाई ॥
पंचाशत सहस्रको अटका । देहु चढ़ाय हमैं बिन खटका ॥
पितु तुरंत करि सब संभारा । दियो चढ़ाय पचासहजारा ॥
अबलों लगत पुरी महँ भोगू । यह प्रसंग जानत सब लोगू ॥
एक समय कालिका सिधारी । मांग्यो भूषण कनकहि टारी ॥
दिय देवी भूषण बनवाई । अबलों पहिरे परम सोहाई ॥

दोहा—नाम जरौली ग्राम एक, तहँ द्विज अम्बरदास ॥

सो कीन्ह्यो अपचार कछु, रघुकुल नाथनिवास ॥ १३ ॥

राम दियो मम पितै रजाई । यहि वैष्णवै देहु निकराई ॥
विश्वनाथ लिखिपठयो पाती । नहिं निकस्यो सो कुपित अघाती ॥
दीन्ह्यो स्वप्न ताहि रघुराई । नहिं कठिहै तौ जई नशाई ॥
तब वैष्णव सो पुरी सिधायो । मंदिरके सब दास टिकायो ॥
चित्रकूट एक समय सिधारे । राममंत्रजप करन विचारे ॥
तहँ प्रगटे श्रीगुरु प्रियदासा । पूजन कीन्ह्यो सहित हुलासा ॥
कोउ रिपु मम पितु पर एक काला । किय मारन अभिचार कराला ॥
निशा स्वप्न देख्यो महाराजा । सर्पहि खायो मटा समाजा ॥
भोर भिक्षुकाचार्य्य समीपा । कह्यो स्वप्न वृत्तांत महीपा ॥

सो कह इतै प्रत्यक्षहि भयऊ । सर्पहि मटा खाय बहु लयऊ ॥
हमहुँ स्वप्न देखा यहि राती । सो तुमसों वणों सबभांती ॥
राम नाम जे अमित जपाये । ते तुव कालरूप यहि खाये ॥

दोहा—ब्रजके गोस्वामी रहे, नाम गोविंदहिलाल ॥

एक समय सो भेद किय, नंदलाल रघुलाल ॥ १४ ॥
तिनसों कह्यो मोर पितुभूषा । भेद न राम कृष्णके रूपा ॥
हरिगोविंदहि स्वप्नहि भाखे । जौन भेद श्रुति तुम कहिराखे ॥
तेहि नृप जो अस अर्थहि करिहैं । तुमहि न उत्तर बहुरि उधरिहैं ॥
राम कृष्णके रूप न भेदा । यह सिद्धांत पुराणहु वेदा ॥
एक समय वरसे नहिं मेचा । तब नृप गायो रागहि मेचा ॥
भई वृष्टि भे प्रजा सुखारी । फूटि चली सब सेतु कियारी ॥
नाम छत्रपति राव कसोटा । विना पुत्र दुख भो तेहिं मोटा ॥
तिनसों पितु कह पुत्रहि होई । भयो पुत्र देख्यो सबकोई ॥
एक समय महँ काशिनरेशा । करि देवी भागवतहि वेशा ॥
विश्वनाथके निकट पठायो । यह भागवत सत्य अस गायो ॥
दुर्जन मुखचपेटिका नामा । ग्रंथ पढ़ायो अतिहि ललामा ॥
पितु किय चंडभास कर ग्रंथा । श्रीभागवत सत्य सतपंथा ॥

दोहा—काशी सो पठवायदिय, सब पंडित तेहि बांछि ॥

श्रीभागवतहि सत्य किय, नृप प्रमाण मन रांछि ॥ १५ ॥
एक समय भइ वृष्टि विशाला । बढ्यो सोननद महा कराला ॥
उतरि गये पाँयन विशुनाथा । भयो बहुरि गंभीरहि पाथा ॥
गये अवधपुर कौनेहुँ काला । जपे राम मनु गहि द्विजमाला ॥
सरयू मज्जन हेतु सिधारा । बहे भूप लहि दारुण धारा ॥
कोश तीनि लग कियो पयाना । नहिं छूट्यो सीतापति ध्याना ॥
आकस्मातमिल्यो तहँ दीपा । खड़े भयेहैं सुमिरि महीपा ॥

॥ दियो दक्षिणा द्विजन समाजा । पुनि आये पितु तीरथराजा ॥
 रोंके सब अँगरेजसिपाहीं । कर दीन्हे विन कोउ न नहाहीं ॥
 पितु जेहि थल महुँ जाय नहायो । वेणी क्षेत्र तहां चलिआयो ॥
 यह सुनिकै अँगरेज विचारी । माफी दीन्ह्यो आठ हजारि ॥
 तब पितु गंगाष्टकहि बनायो । ताहि सुनावत जल बढि आयो ॥
 बांधौ गिरि वघेलगढ़ गूढ़ो । होतो जाहि तकत रिपु मूढ़ो ॥
 रही गुप्त गंगा तेहिं माथा । तेहि प्रगटायो पितु विशुनाथा ॥
 दोहा—दिल्ली नगर समीपमें, एक महीपकुमार ॥

जस जस कियो उपाय सो, तस तस भयो बेजारा ॥ १६ ॥
 तेहिं कह गोविंदलाल गोसांई । मानहु विश्वनाथ हरि नाई ॥
 सो किय सकल यही उपचारा । तुरत पुत्रभो रहित विकारा ॥
 गंगापार एक द्विज हेरी । गर्भ गिरै असि गति तियकेरी ॥
 विश्वनाथको सो कछु मान्यो । भयो पुत्र पुनि भयो सयान्यो ॥
 ते दोउ चलि विशुनाथहि नेरे । मुंडन किय निज पुत्रन केरे ॥
 औरहु चरित अनेकन तिनके । कहौं कहां लगि भणित कविनके
 खास कलम युगलेश प्रवीना । कियो जो ग्रंथ उदोत नवीना ॥
 नामचरित विशुनाथ विलासा । तिनमें सब युगलेश प्रकाशा ॥
 रचे जितेक ग्रंथ पितु मोरा । राम परंतुहि शास्त्र निचोरा ॥
 साधु सुबुद्धि सबै हरिदासा । ते मम पितु सों जौन प्रकाशा ॥
 सब वैष्णव मतते अविरुद्धा । रच्यो ग्रंथ सिंगरे पितु शुद्धा ॥
 राम कृष्णके रूप अभेदा । यह प्रतिपादक संमत वेदा ॥

दोहा—ते ग्रंथनके नाम सब, रचि छप्पय कमनीय ॥

मैं वणौं यहि ग्रंथमें, सुनहु साधु रमणीय ॥ १७ ॥

छप्पय—विनयमाल रचि प्रथम फेरि आनंद रामायन ॥

गीतावलि नाटकौ अनंद रघुनंदन चायन ॥

शान्तशतक व्यंग्यप्रकाश कृष्णावलि काहीं ॥
 नीति ध्रुवाष्टक वृहद एक लघुनीति उछाहीं ॥
 अरुश्रीकबीर बीजक तिलक, धर्मशास्त्र चौखंड किया ॥
 हनुमतपैंतीसिसिकारके, कवितरच्यो अतिमुदित हिय
 कुंडलिया चौंतीसि तत्त्व परकाश बखान्यो ॥
 ग्रंथ विचार सुसार धनुषविद्याको ठान्यो ॥
 वरग जलाशय विधिहु बीछि सर्पादि मंत्र पुनि ॥
 वैद्यक पाकविलास और बहु अष्टक किय गुणि ॥
 ब्रज जिवनगोसाई नामको, रच्यो गीत रघुनंदनो ॥
 परम प्रमोद विधुनाटकौ, कृष्णाह्निक भाषा बनो ॥२॥
 राधावल्लभ भाष्य सर्व सिद्धांत सुहायो ॥
 रामाह्निक करि ग्रंथ संगित रघुनंदन भायो ॥
 गुरुग्रंथ सुमारग तिलक तिलक अध्यात्महु केरो ॥
 वाल्मीकि संदर्भ भागवत तिलक घनेरो ॥
 ये रच्यो ग्रंथ संस्कृत शुभग माधव गायक नामवर ॥
 वरण्यो भुशुंडि रामायणौ भाषामें सुखप्रद सुघर ॥३॥

दोहा—धनि धनि अवध नगर प्रजा, पशु पक्षीजन व्रात ॥
 भजनावलि यक ग्रंथ लघु, रच्यो नाथ अवदात ॥१८॥
 संवत वोनइस सै शुभग, आयो ग्यारह साल ॥
 मास अषाढ़ चतुर्दशी, पितु ज्वर भयो कराल ॥१९॥
 तेहि दिन देख्यो स्वप्न पितु, गायक काशीनाथ ॥
 आय कह्यो कछु आपको, हुकुम दियो रघुनाथ ॥२०॥

यह तनु त्यागि दिव्य वपुपाई । वसहु रासमहँ अब तुम आई ॥
 यह लखि स्वप्न पिता सुख मान्यो । भोराहि मोहि बोलाय बखान्यो ॥

अब तुम करहु राज्य संभारा । करि भरोस दशरत्थ कुमारा ॥
 अवैन करहु दरश जगदीशा । जाहु विते कछु दिन विसवीसा ॥
 अब यात्रा साकेत हमारी । करहु न कछू सोच उर भारी ॥
 जो वियोग को कछु दुख मानो । तौ उपाय तुमहूँ अस ठानो ॥
 दियो जो गुरू मंत्र तुमकाहीं । जपहु नेम करि ताहि सदाहीं ॥
 तौ हम तुमहिं मिलब साकेतै । तहँ जानहु हमार संकेतै ॥
 साधुनमें कीन्हेहु भल प्रीती । रहेहु स्वतंत्र गुनेउ नहिं भीती ॥
 लोक हेतु जो कह अँगरेजू । सो मानेहु गुणि रघुवर तेजू ॥
 रामकृष्ण कर कियो भरोसा । दिहेहु दंड नहिं गुणि विन दोसा ॥
 दान द्विजन साधुन सम्माना । यही मुक्तिको पंथ प्रमाना ॥

दोहा—यहि विधि मोहिं उपदेश करि, सिखै भजन की रीति ॥

झिरियाते रीवां गये, करि न कालकी भीति ॥ २१ ॥

यक दिन इक वैष्णव तहँ आयो । परमहंस निज नाम सुनायो ॥
 तेहिं देखत पितु कह्यो कवीरा । भलो कियो आयो मतिधीरा ॥
 सो कह साहेब दुकुम चलनको । तुम कस बैठे जगत् मिलनको ॥
 तुमहिं लेवावन हम इत आयो । जस आगम निदेशमहँ गायो ॥
 पितु कह चलिहौं संशय नाहीं । सो सुनि गयो साधु घरकाहीं ॥
 फेरि मोहिं पितु निकट बोलायो । दै मुद्रिका सु वचन सुनायो ॥
 रामरजाय शीश धरि लेहू । करहु राज्य अब विन संदेहू ॥
 अस कहि भे पुनि मौन विज्ञानी । रहे बैठि हरिध्यानहिं ठानी ॥
 जपत सुरामकृष्ण कर माला । अर्धोन्मीलित नयन विशाला ॥
 संवत वोनइस सै इग्यारा । कातिक मास रह्यो भृगुवारा ॥
 कृष्णपक्ष सप्तमि जब आई । डेढ़ पहर आये दिनराई ॥
 सब तनु तजि पूरुव यश गायो । पितालोक साकेत सिधायो ॥